जनशाला
उत्तर प्रदेश

बढ़ते कदम

जनशाला कार्यक्रम
विद्या भवन, निशातगंज, लखनऊ
फरवरी 2002

जनशाला
उत्तर प्रदेश

बढ़ते कदम

जनशाला कार्यक्रम
विद्या भवन, निशांतगंज, लखनऊ
फरवरी 2002

अनुक्रमणिका

1.	हमारी पहचान	5
2.	जनचेतना की बयार	6
3.	सूक्ष्म नियोजन	7
4.	बच्चों के उपलब्धि स्तर का मापन	9
5.	शिक्षक प्रशिक्षण	11
6.	प्रशिक्षण के बाद का दृश्य	14
7.	विद्यालयों का बदलता स्वरूप	15
8.	शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण	16
9.	ग्राम शिक्षा समितियों का प्रशिक्षण	18
10.	एम.टी.ए./पी.टी.ए. प्रशिक्षण	20
11.	स्कूल चलो अभियान	23
12.	कला जत्था	25
13.	ग्रीष्म कालीन शिविर	26
14.	बालमेला	27
15.	पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण	31
16.	शिक्षा मित्र	33
17.	समय की मांग	35
18.	विकलांगता परीक्षण शिविर	37
19.	बच्चों का अपना पुस्तकालय	42
20.	नवाचार	43
21.	जनशाला की उपलब्धियों का दर्पण	45
22.	शैक्षिक भ्रमण	46
23.	विभिन्न विभागों से समन्वय	47
24.	स्वयं सेवी संस्थाएं -वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रम	48
25.	कहानी एक कोशिश की	52
26.	अखबारों की जुबान	54

हमारी पहचान

उत्तर प्रदेश की हृदय स्थली, नज़ाकत और नफासत की जन्मभूमि, तहजीब-ओ-तरन्नुम का शहर जनपद लखनऊ गोमती नदी के दोनों तटों पर अपनी पूरी आन,बान, शान के साथ स्थापित है। कहा जाता है कि मर्यादा पुरूषोत्तम राम के अनुज लक्ष्मण के द्वारा बसाये जाने के कारण इसका नाम लक्ष्मणपुरी पड़ा, जो कालान्तर में बदल कर लखनपुर से लखनऊ हो गया। इस शहर की खूब सूरत चिक़नकारी, जरदोज़ी, कुन्दनकारी, दशहरी आम, लज़ीज भोजन एवं शायरी का एक अलग अन्दाज है। यह शहर नवाबों की शानो-शौकत के लिये भी जाना जाता है। बड़ा इमामबाड़ा वास्तु कला का एक बेजोड़ नमूना है। आज भी देश विदेश के हजारों पर्यटक इसे देखने प्रतिदिन आते हैं। भूलभुलैया का तिलिस्म आज भी दर्शकों को 'आदाब लखनऊ' कहने को विवश कर देता है। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास भी इस शहर के बिना नहीं लिखा जा सकता हैं। बेगम हजरत महल क नेतृत्व में अंग्रेजों से हुआ युद्ध तथा अपना बलिदान देकर भी अंग्रेजों से लोहा लेने की कहानी आज भी रेजीडेन्सी की दीवारें कहती हैं। हिन्दुस्तान में मशहूर शामे अवध की नजाकत आज भी दिखायी देती है तो मेहमान नवाजी की परम्परा निभाता आज भी यह शहर यही कहता है "अरे हुजूर पहले आप"। यह तस्वीर का एक रूख है। आइये इसका दूसरी रूप भी देखें।

उ0प्र0 की राजधानी लखनऊ लगभग 36 लाख की आबादी अपने में समेटे हुए है साक्षरता दर बेहतर होते हुए भी अपने आसपास काफी संख्या में स्कूल न जाने वाले बच्चे, बूट पालिश करते, होटलों ढाबों में काम करते, कारों को साफ करते हुए, भिक्षावृत्ति में लगे हुए, मलिन बस्तियों में प्लास्टिक की थैलियां, कागज बीनते, ज़री, जरदोज़ी, चिक़न का काम करते, घरों में झाड़ू पोंछा करती बच्चियां, काफी तादाद में अक्सर देखने को मिलती हैं। ये बच्चे आर्थिक तंगी के कारण पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करने को मजबूर हैं। स्कूल जाने वाले बच्चों की स्थिति भी सन्तोषजनक नहीं थी। माता-पिता की अशिक्षा, आर्थिक तंगी, विद्यालयों की जर्जर स्थिति, शिक्षकों का अभाव, सुविधा विहीन एवं अनाकर्षक विद्यालय भी बच्चों को अपनी ओर खींचने में असमर्थ थे। ऐसे में प्रदेश में संचालित विभिन्न शैक्षिक परियोजनाओं से वंचित लखनऊ जनपद में सन 2000 में 'जनशाला' ने दस्तक दी।

प्रथम चरण में लखनऊ के सम्पूर्ण ग्रामीण क्षेत्र के समस्त 8 विकास खण्ड एवं नगर क्षेत्र के दो वार्डों में यह कार्यक्रम क्रियान्वित किया गया। द्वितीय चरण में सम्पूर्ण नगर क्षेत्र जनशाला से आच्छादित हुआ। प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार का एक अनूठा एवं महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है -जनशाला। ठहराव युक्त नामांकन, वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था, शैक्षिक व्यवस्था में सुधार, विद्यालय प्रबन्धन में समुदाय की भागीदारी, अपनेपन की भावना को जागृत करते हुए प्राथमिक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण करना जनशाला का लक्ष्य है।

जनचेतना की बयार

सन 2000 की तपिश भरी गर्मी के उपरान्त वर्षाऋतु की फुहार के रूप में एक नई चेतना लेकर आई डायट-लखनऊ के राधाकृष्णन सभागार में सम्पन्न हुई विजनिंग कार्यशाला, जिसमें शिक्षा विभाग से जुड़े सभी अधिकारी, अभिकर्मी, जनसेवी संस्थायें, जन प्रतिनिधि, ग्राम पंचायत के सदस्यों को शिक्षा व्यवस्था की दशा और दिशा के बारे में नये सिरे से सोचने हेतु बाध्य किया।

इसी क्रम में जनपद के सभी विकासखण्डों और नगर क्षेत्र के दो वार्डों में विजनिंग कार्यशालायें जनवरी माह में एक साथ आयोजित की गईं जिसमें जनसमुदाय, ग्रामप्रधान, ग्राम पंचायत सदस्य, ग्राम वासियों, प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों, नेहरू युवाकेन्द्र के कार्यकर्ताओं को सीखने सिखाने के मनोवैज्ञानिक पहलुओं, रोचक एवं प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न गतिविधियां, विद्यालयों की वर्तमान स्थिति, पाठ्यक्रम, पाठ्य पुस्तकें, शिक्षक प्रशिक्षण, पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन के सम्बन्ध में सोचने का अवसर दिया।

विजनिंग कार्यशाला

• प्रथम चरण	डायट स्तर पर कार्यशाला
• द्वितीय चरण	प्रत्येक विकास खण्ड/वार्ड में दो-दो फेरे
• प्रशिक्षणार्थी	• डायट संकाय सदस्य • प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक एवं अध्यापक • ग्राम प्रधान • ग्राम पंचायत सदस्य • ग्रामवासी • जनसमुदाय • नेहरू युवा केन्द्र के कार्यकर्ता • स्वैच्छिक संस्था के कार्यकर्ता
• कुल प्रतिभागी	500

इन प्रयासों के बाद ये सभी जनशाला कार्यक्रम के सहभागी बन गये

अभिभावक समूह	विभिन्न शैक्षिक अभिकरण	सांस्कृतिक संगठन
संचार केन्द्र	महिला संगठन	स्वायत्तशासी संख्याएं
स्वास्थ्य एवं चिकित्सा विभाग	स्थानीय निकाय	गैर सरकारी संस्थान
महिला एवं बाल कल्याण विभाग	समाज कल्याण केन्द्र	विकलांक विभाग
उ.पं. जल निगम	सूडा	डूडा आदि

सूक्ष्म नियोजन

जन-जन से जुड़ती जनशाला

विजनिंग कार्यशालाओं से परिवर्तित सोच को क्रियान्वित करने हेतु सूक्ष्म नियोजन एवं शाला मानचित्रण विषयक कार्यशालाएं प्रथम चरण में डायट स्तर पर तथा द्वितीय चरण में विकास खण्ड स्तर पर आयोजित की गईं। नगर क्षेत्र में डूडा और एन.वाई.के. (नेहरू युवा केन्द्र) के सहयोग से यह कार्य सम्पन्न किया गया।

डायट स्तर पर आयोजित कार्यशालावधि में किये गये ग्राम सर्वेक्षण के दौरान यह अनुभव किया गया कि प्रत्येक गांव की आवश्यकतायें, समस्यायें भिन्न-2 हैं। अतः प्रत्येक गांव की अलग शिक्षा योजना निर्मित करनी होगी। इस हेतु प्रत्येक विकास खण्ड में उपर्युक्त विषयक ग्राम सर्वेक्षण एवं शाला मानचित्रण के उपरान्त ग्राम शिक्षा योजना तैयार की गई। जिस समय ग्राम शिक्षा योजना तैयार की जा रही थी उस समय ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों, गांव के उत्साही नवयुवकों, घरों एवं पर्दे में रहने वाली महिलाओं ने भी बढ़चढ़ कर गांव की समस्याओं, आवश्यकताओं के विषय में अपने विचार रखे। बाजनगर, लालखेड़ा गांव काकोरी ब्लाक में श्रीमती हमीदा बानो और मेवालाल ने गांव में लड़कियों की पढ़ाई को आगे बढ़ाने हेतु जूनियर हाई स्कूल की मांग की। इसी तरह ससपन माल में काफी तादाद में बालिकाएं विद्यालए दूर होने के कारण शिक्षा से वंचित थीं उनके लिए ग्राम वासियों ने वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों की मांग की। ग्राम 'दशहरी' में दो वर्गों के आपसी झगड़े के कारण प्रा.वि. एक खपरैल के नीचे लगाया जाता था। वहां 'रामकिशन' व रामरती देवी ने शासन से मांग की कि इस विवाद को समाप्त कर विद्यालय भवन निर्धारित स्थल पर ही

माइक्रोप्लानिंग प्रशिक्षण में प्रतिभाग करते श्री विनोबा गौतम जी

बनाया जाय ताकि बच्चे शिक्षा ग्रहण कर सकें।

सूक्ष्म नियोजन के परिणाम स्वरूप विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या विकलांग बच्चों की संख्या, शिक्षकों की कमी, विद्यालय की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक आधार मिला।

इसी आधार पर हमने अपनी आगामी कार्य योजना में यह सुनिश्चित किया कि -

1 उन पांच गांवों में समर कैम्प लगवाये जायें जहाँ शालात्यागी बालिकाओं की संख्या सर्वाधिक हैं।

2 उन गांवों में कला जत्था के दल भेजकर अभिभावकों में बच्चों के स्कूल भेजने हेतु प्रेरित किया जाय जहां विद्यालय न जाने वाले बच्चों की संख्या अधिक है।

3 विकासखण्ड माल में जहां शिक्षक छात्र अनुपात (TPR) सर्वाधिक है वहाँ शिक्षकों की वैकल्पिक व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षा मित्रों की नियुक्ति की जाय।

4 विकलांग बच्चों को आवश्यक उपकरण उपलब्ध कराया जाय।

5 उन विद्यालयों में जहां विकलांग बच्चे पढ़ते हैं उन्हें बाधारहित (Barrier free) बनाने के लिए रैम्प एवं शौचालय की व्यवस्था की जाय।

6 पेयजल एवं शौचालय की सुविधा प्रत्येक विद्यालय में हो जाय इस हेतु सम्बन्धित विभागों से समन्वय।

7 नगर क्षेत्र के भवनहीन विद्यालयों के लिए भवन की वैकल्पिक व्यवस्था करना।

8 विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं की व्यवस्था करना।

9 शिक्षक छात्र अनुपात के अनुसार अध्यापकों को समायोजित करना।

10 असेवित क्षेत्रों में नये विद्यालयों की स्थापना हेतु बेसिक शिक्षा से प्रयास।

सूक्ष्म नियोजन का एक परिदृश्य

दिनांक : 27-7-2000

स्थान : बाज नगर, विकास खण्ड काकोरी

आमों के बागों के बीच से होते हुए गांव की उस सड़क पर 18-20 वयवर्ग के कुछ नव युवा जुआ खेलने में लगे हुए थे उनसे जब प्राइमरी स्कूल का रास्ता पूछा तो बड़े बेमन से स्कूल का रास्ता बताया। खुली नालियों और पानी के जमाव को पार कर जब हमारा काफिला स्कूल के पास पहुंचा तो आस पास रहने वाले माता-पिता उत्सुकतावश आ गये।

सबने साथ मिल कर गांव का भ्रमण किया। गांव के काफी उत्साही नवयुवक व महिलायें हमारे समूह में आ मिले। घर-घर जाकर हमने परिवार सर्वेक्षण करके आंकड़े एकत्र किये। एक घर में हमीदा बानो अपनी बेटी तस्लीम के साथ चिकन कढ़ाई का कुर्ता काढ़ रही थीं। 13 वर्ष की तस्लीम पैर से विकलांग थी। उसे कहीं भी पढ़ने नहीं भेजा जा रहा था। बातचीत से पता चला कि विकलांग होने की शर्म तथा आर्थिक तंगी के करण तस्लीम स्कूल न जाकर घर में मां के साथ काम करती है। ऐसे ही और कई घरों में स्कूल न जाने वाले बच्चे मिले। शाम को हमने स्कूल के खुले प्रांगण में सभा की जिसमें बहुत से ग्रामवासी जैसे मेवालाल रामदीन, कलावती, रामदेवी, हमीदाबानो, शमीमा और अमीरून प्रमुख थीं जिन्होंने शाला मानचित्रण में बड़े उत्साह से भाग लिया। ग्राम शिक्षा योजना बनाने में गांव के इण्टर पास युवक राजेश व सुमेर ने अपने गांव की आवश्यकताओं समस्याओं के साथ-साथ उनके समाधान के सुझाव दिये।

बच्चों के उपलब्धि स्तर का मापन
(Base Line Survey)

किसी भी समस्या के समाधान हेतु सही परीक्षण और निदान आवश्यक है। SCERT के विशेषज्ञों के सहयोग से प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बच्चों की उपलब्धि स्तर की जांच के लिए रैन्डम सैम्पलिंग के आधार पर चार विकास खण्ड मोहनलालगंज, बी.के.टी., काकोरी और हजरतगंज वार्ड के 50 विद्यालयों में आधार भूत मूल्यांकन किया गया। आंकड़ों में संकलन और विश्लेषण से निम्न बिन्दु उभर कर आये।

1. कक्षा 2 के बच्चों का भाषा का माध्यम अधिगम स्तर 45.25 प्रतिशत व गणित के 52.37 प्रतिशत मिला।
2. कक्षा 5 में भाषा का 40.81 प्रतिशत तथा गणित का 33.62 प्रतिशत है।
3. कक्षा 2 में भाषा में 12.9 प्रतिशत बच्चे प्रवीण थे, 19 प्रतिशत प्रवीणता की ओर थे तथा 17.8 प्रतिशत बच्चों ने न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त कर लिया था किन्तु 50.3 प्रतिशत बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर सके थे।
4. कक्षा 2 में गणित में 22.59 प्रतिशत प्रवीण थे, 14.74 प्रतिशत बच्चे प्रवीणता की ओर थे तथा 2094 प्रतिशत बच्चों ने न्यनूतम अधिगम स्तर प्राप्त कर लियाा था किन्तु 41.74 प्रतिशत बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर सके थे।
5. कक्षा 5 में भाषा में केवल 0.6 प्रतिशत बच्चे प्रवीण थे, 8.5 प्रतिशत बच्चे प्रवीणता की ओर थे तथा 42.4 प्रतिशत बच्चों ने न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त किया था जबकि 48.6 प्रतिशत बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर सके थे।
6. कक्षा 5 में गणित में 0.7 प्रतिशत बच्चे प्रवीण थे, 8.17 बच्चे प्रवीणता की ओर थे तथा 20.9 प्रतिशत बच्चों ने न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त कर लिया था जबकि 70.3 प्रतिशत बच्चे न्यूनतम अधिगम स्तर प्राप्त नहीं कर सके थे।
7. चयनित विद्यालयों में से से 56 प्रतिशत विद्यालयों में शिक्षक छात्र अनुपात 1/40 मिला।
8. जातिवार उपलब्धि स्तर में विशेष अंतर नहीं था जब कि कक्षा 5 में गणित में अनुसूचित जाति के बच्चों का उपलब्धि स्तर अन्य जातियों से बेहतर था।

इस मापन के दौरान हमें अनुभव हुआ कि अधिकांश बच्चे बातचीत करने में झिझक रहे थे, शिक्षक भी काफी घबड़ाये हुये थे। हमारे उद्देश्य को जानकर जब वे आश्वस्त हुये तो शिक्षक के साथ

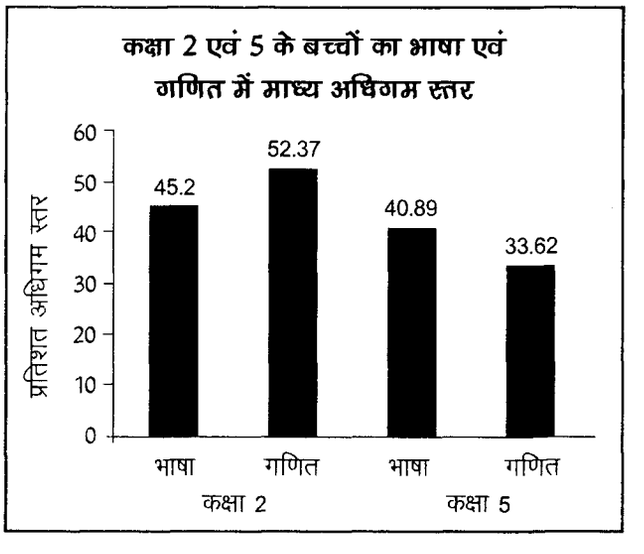

बच्चों ने भी प्रश्नों के उत्तर दिये। बारिश के बाद की उमस भरी गर्मी में चिनहट विकास खण्ड के सूगामऊ गांव में पहुंचना भी एक अलग अनुभव था। चहारदीवारी विहीन विद्यालय, उखड़ा प्लास्टर, कम उपस्थिति, रोशनी और हवा का, अभाव में जमीन पर बैठे बच्चे अपनी अलग दास्तां कह रहे थे। पढ़ाई का माहौल नहीं था। बच्चों के पास पुस्तकें, कापी, स्लेट, पेन्सिल वगैरह कुछ नहीं था इन विषम परिस्थितियों में बेस लाइन सर्वे सम्पादित किया गया।

आधार भूत मूल्यांकन

- चयनित विकास खण्ड — 4 (मोहनलालगंज, बीकेटी, काकोरी, चिनहट)
- वार्ड — हजरतगंज
- चयनित प्रा0 विद्यालय — 50

बच्चों की संख्या जिन पर परीक्षण किया गया।

- कक्षा 5 — 694 (ग्रामीण 615, शहरी 79)
- कक्षा 2 — 726 (ग्रमीण 631, शहरी 95)

आधारभूत मूल्याकंन से प्राप्त आंकड़ों से यह तथ्य सामने आया कि बच्चों का ज्ञान, न्यूनतम अधिगत स्तर (MLL) से काफी कम है। इसलिए जनशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए तथा विद्यालयों में रूचिपूर्ण वातावरण में पठन पाठन की व्यवस्था किए जाने हेतु महत्वपूर्ण प्रयास किये जाने की आवश्यकता थी। इस हेतु निम्न कार्य किया जाना तय किया गया -

- विद्यालयों का वातावरण आकर्षक बनाना।
- विद्यालयों की रंगाई पुताई तथा अन्य आधारभूत सुविधाएं दिये जाने के लिए प्रतिवर्ष रू0 5000/- का विद्यालय विकास अनुदान दिया जाना।
- बच्चों को बैठने के लिए टाट पट्टी के स्थान पर प्लास्टिक की आकर्षक चटाइयों की व्यवस्था किया जाना।
- प्रधानाध्यापक के कक्ष को संसाधन कक्ष/रिसोर्स रूम की तरह प्रयोग करना।
- कक्षा कक्षों में बच्चों के प्रयोग करने के लिए तीन फुट की हरी पट्टी की व्यवस्था।
- शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण के लिए प्रत्येक अध्यापक को प्रतिवर्ष रू0 500/- का अनुदान।
- सभी बच्चों के लिए निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों की व्यवस्था।
  कक्षा-1 के बच्चों के लिए टेफ्लान कोटेड स्लेट की व्यवस्था।
- सभी अध्यापकों को दस दिवसीय प्रभावी प्रशिक्षण दिया जाना।
- बच्चों की प्रगति से अभिभावकों को नियमित रूप से अवगत कराना।
- अध्यापक तथा अभिभावक के बीच की कड़ी को मजबूत करना।
- अध्यापकों को शैक्षिक सपोर्ट देने के लिए बी.आर.सी. तथा एन.पी.आर.सी की स्थापना एवं क्रियान्वयन।

प्रशिक्षण सन्दर्शिकाओं का निर्माण

शिक्षक प्रशिक्षण प्रारम्भ करने के पूर्व माइक्रोप्लानिंग के साथ-साथ हमें आगे बढ़ने के लिए एक सधी-सधायी रणनीति के तहत अनेक कार्य करने थे जिसमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य था प्रशिक्षण माड्यूल निर्माण का निर्णय लिया गया कि डी.पी.ई.पी. के ही माड्यूल को अद्यतन कर लिया जाय। हमने अपनी आवश्यकतानुसार सभी माड्यूल को संशोधित किया तथा अपर परियोजना निदेशक/निदेशक जनशाला ने अपने अनुभव के आधार पर माड्यूल को नये आयाम दिये। इनमें प्रमुख हैं- यूनेस्को के प्रतिनिधि डा0 दासवानी के सौजन्य से कई चरणों में किये गये प्रयास के बाद तैयार की गयी ''बहुकक्षा शिक्षण व्यवस्था'' जिसका प्रयोग शिक्षक प्रशिक्षण में किया गया। इसके अतिरिक्त तैयार किये गये अन्य प्रशिक्षण माड्यूल हैं -

1 साधन - विचार पत्रक
2 साधन - पाठ योजना
3 सोपान - गणित में स्वनिर्देशित पाठ्य सामग्री
4 समर्थन - बी.आर.सी. एवं एन.पी.आर.सी. समन्वयकों के लिए प्रशिक्षण माड्यूल।
5 समेकित शिक्षा हस्तपुस्तिका - विकलांग बच्चों हेतु विशिष्ट शिक्षा पद्धतियों पर आधारित।
6 विकलांगतावार समेकित शिक्षा के छः फोल्डर।

इसके अतिरिक्त प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण के दौरान प्रयोग करने हेतु भी दो संदर्शिकाओं का परिवर्धन किया गया -

1 प्रशिक्षण सन्दर्शिका।
2 सत्र योजना।

ये सन्दर्शिकाएं हमारे प्रशिक्षण का आधार बनीं। इन्हीं के आधार पर हमने 10 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम को विभिन्न चरणों में विभक्त किया। ये थे -

शिक्षक संवेदीकरण	- 2 दिन
नवीन पाठ्य पुस्तकों का प्रयोग	- 1 दिन
बहुकक्षा शिक्षण व्यवस्था एवं समय प्रबन्धन	- 1 दिन
समेकित शिक्षा	- 1 दिन
टी.एल.एम. निर्माण	- 1 दिन
कक्षा शिक्षण अभ्यास	- 2 दिन
टी.एल.एम. प्रदर्शनी एवं समापन	- 1 दिन

बी.आर.सी./एन.पी.आर.सी. प्रशिक्षण

ब्लाक संसाधन केन्द्रों एवं न्याय पंचायत संसाधन केन्द्रों के समन्वयकों का चयन डायट द्वारा किया गया। नगर क्षेत्र को भी दो वार्डो में बांटकर दो डब्लू.आर.सी. बनाये गये एवं उनके भी समन्वयक चयनित किये गये इन सभी चयनित समन्वयकों का चार दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण नेडा में आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण में उन्हें बी.आर.सी./एन.पी.आर.सी. के कार्य तथा दायित्व, विभिन्न प्रकार की बैठकें तथा गोष्ठियां व विद्यालयों का भ्रमण, शैक्षिक सपोर्ट, प्रशिक्षणों का आयोजन, विभिन्न प्रतियोगिताओं के आयोजन आदि की जानकारी दी गयी।

शिक्षक प्रशिक्षकों का चयन तथा प्रशिक्षण

ब्लाक स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण सम्पन्न कराने के लिए सर्वप्रथम सभी विकासखण्ड़ों से पांच-पांच प्रतिभागी चयनित किये गये। इन चयनित प्रतिभागियों को 10 दिवसीय पूर्ण आवासीय शिक्षक प्रशिक्षण दिया गया जो

24.01.2001 से 02.02.2001 तक नेडा में सम्पन्न हुआ। इसमें राज्य सन्दर्भ समूह के प्रशिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया गया तथा प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण स्तर की सम्पूर्ण जानकारी पाने के लिए सभी ब्लाक/वार्ड स्तरीय समन्वयकों को भी प्रतिभाग कराया गया। प्रशिक्षण अवधि में प्रत्येक प्रतिभागी की गतिविधियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने के बाद 80 प्रतिभागियों में से केवल 32 प्रतिभागियों को प्रशिक्षक के रूप में कार्य करने हेतु उपयुक्त पाया गया तथा इन्हीं प्रशिक्षकों से ब्लाक स्तरीय प्रशिक्षण सम्पन्न कराये गये जिससे कि प्रशिक्षण की गुणवत्ता कम न हो।

और शिक्षकों की मानसिकता बदली

प्रा. विद्यालय गोपाल खेड़ा, मोहनलालगंज का दृश्य ही निराला था। परिसर के बाहर कुछ नवयुवक मादक द्रव्य का सेवन करते हुए ताश खेल रहे थे तथा अनाप शनाप बोल रहे थे। विद्यालय के बरामदे में कई कक्षाओं के बच्चे मिले जुले सटे बैठे थे तथा महिला शिक्षिकायें आपस में बातचीत कर रही थीं। बीच-बीच में मेज पर डंडी बजा दे रही थीं। पढ़ाई लिखाई का कोई वातावरण नहीं दिख रहा था। डायट सदस्यों को देखकर सभी अपनी कक्षाओं में चली गईं। कक्षा शिक्षण में पाया कि कक्षा 2 में एक बच्चा जोर-जोर से पहाड़े याद कराने लगा। कक्षा तीन में बच्चे श्याम पट्ट पर लिखे हुए प्रश्नोत्तरों को बिना समझे हुए उतार रहे थे। कुछ बच्चे आपस में मारपीट कर रहे थे। विद्यालय के हैण्डपम्प पर गांव की औरतें कपड़े धो रही थीं तथा कुछ बच्चे पानी पी रहे थे।

विद्यालय के इस शैक्षिक परिदृश्य को बदलने के लिए जनशाला ने कदम उठाया। राज्य स्तरीय सन्दर्भदाताओं के द्वारा प्रशिक्षित शिक्षक सन्दर्भ समूह द्वारा ब्लाक स्तर पर दस दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण प्रारम्भ किये गये। प्रशिक्षण में शैक्षिक गतिविधियों, खेल, विषयान्तर क्रियाओं के साथ विषयगत सम्बोधों, सामाजिक चेतना, टी.एल.एम. निर्माण, प्रा. विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास, समूह चर्चा-वार्ता, में सभी शिक्षकों ने सक्रियतापूर्वक प्रतिभाग किया।

ब्लाक चिनहट के प्रशिक्षण कार्यक्रम की एक झलक

स्थान - डूडा द्वारा निर्मित सामुदायिक केन्द्र का सभागार
प्रतिभागियों की संख्या - 32

प्रातः कालीन सत्र का प्रारम्भ प्रार्थना के साथ हुआ किन्तु आदतवश प्रधानध्यापकों की संख्या काफी कम थी। देर से आने वाले शिक्षकों को 'बोनस' देने के लिए कहा गया। बोनस कोई भी देने को तैयार नहीं था तथा सभी हंस कर टाल रहे थे। ऐसे में अनवार अहमद उठकर आगे आये तथा स्वयं से स्वरचित कविता सुनाई। धीरे-2 शेष लोगों ने भी कोई चुटकुला, कहानी, घटना सुनाई। शनैः शनैः आपस की दूरी कम हुई। प्रारम्भ में जो लोग बाल अखबार, भित्ति चित्रण, प्रतिवेदन प्रस्तुत करने में झिझकते थे। वे आगे बढ़कर उत्साह से काम करने लगे। समूह चर्चाओं और शैक्षिक खेलकूदों में जो पहले कहते थे कि बूढ़े होकर अब क्या राम-राम रटेंगे, वही प्रतिभागी स्वेच्छा से प्रतिस्पर्धा की भावना से अपने समूह के प्रस्तुतीकरण हेतु प्रयासरत हो गये। टी.एल.एम. बनाने में भी सबने समूहवार विषयवार शिक्षण सामग्री बनाई तथा शिक्षण अभ्यास में प्रयोग भी किया। प्रशिक्षण के अन्तिम दिवस ग्राम पंचायत उपाध्यक्षा श्रीमती इन्दु यादव ने अध्यापकों के कार्यों की सराहना की। अपने विचारों को व्यक्त करते हुए बताया कि अब तक इस प्रकार के किसी भी प्रशिक्षण की जानकारी हमें नहीं थी। प्रशिक्षण के प्रति मेरी नकारात्मक धारणा भी बदली

शिक्षक प्रशिक्षण

- प्रत्येक विकास खण्ड एवं दो वार्डों से 5–5 (कुल – 50) सदंर्भदाताओं का चयन
- चयनित संदर्भ दाताओं एवं डायट मेन्टर का 10 दिवसीय संन्दर्भदाता प्रशिक्षण (साधन – सोपान, गतिविधियां टी.एल.एम. एवं समेकित शिक्षा पर आधारित माड्यूल के अनुसार)
- प्रथम चरण में ग्रीष्मावकाश में सभी विकास खण्ड एवं दो वार्डों में एक साथ प्रधानाध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया।
- द्वितीय चरण में सहायक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया।
- अद्यतन जनपद के लगभग 2800 शिक्षक प्रशिक्षित हो चुके हैं।
- प्रशिक्षण के द्वौरान वीडियों कैसेट का प्रदर्शन
- टी.एल.एम. निर्माण एवं प्रदर्शनी
- कक्षा शिक्षण अभ्यास
- समेकित शिक्षा के बारे में विस्तृत ज्ञान पर विशेष बल दिया गया।

है। अब मेरे गांव के सभी-बच्चे प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

शिक्षक प्रशिक्षण की अवधि में कक्षा 1 से 5 तक की पाठ्य पुस्तकों पर आधारित चौदह शिक्षक संदर्शिकाओं का प्रयोग शिक्षण अभ्यास में किया गया तथा प्रत्येक विद्यालय हेतु शिक्षक संदर्शिकाओं का एक-एक सेट भी प्रदान किया गया।

प्रशिक्षण के बाद का दृश्य

प्रभावी प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण के उपरान्त कक्षा शिक्षण में पर्याप्त सुधार का संकल्प लेकर गये अध्यापकों ने विद्यालयों को नये सिरे से सजाया संवारा है। रंगीन चटाइयों पर बच्चे बैठे हुये हैं। बच्चे साफ सुथरे हैं कुछ गणवेश में हैं, बालों में कंघी की हुई है और आंखों में चमक एवं खुशी है। शिक्षिकायें अपनी-2 कक्षा में शिक्षण कर रही हैं। कक्षा-कक्ष चार्ट-वर्णमाला अंक ज्ञान, फल-फूल, शरीर के अंग, ऋतुओं के चार्ट, ग्लोब, मानचित्र से सुसज्जित हैं। सभी शिक्षकों के पास प्लास्टिक की कुर्सी हैं तथा प्रधानाध्यापक कक्ष, पुस्तकों को रखने की अलमारी, स्टील की अलमारी, सनमाइका टेबिल मेज तथा चार्टों से सुसज्जित

है। विद्यालय का विषयवार कक्षावार टाइम टेबिल बना हुआ था। प्रधानाध्यापक श्री सिंह कक्षा दो और तीन के बच्चों को 'बोल भाई बोल कितने, आप चाहे जितने, की गतिविधि करा रहे थे। जिससे बच्चे खेल-खेल में सम-विषम संख्यायें, पहाड़े, जोड़ आदि सीख रहे थे। कक्षा 1 के बच्चे फ्लैश कार्ड से वर्णाक्षर सीख रहे थे। कक्षाओं में बच्चों की उपस्थिति ठीक थी। कक्षा 5 में शिक्षक स्वनिर्मित ज्वालामुखी माडल से भौगोलिक सम्बोध का ज्ञान करा रही थी। कक्षा में बच्चे पढ़ने में रूचि ले रहे थे। समुदाय के लोगों ने बताया कि अब बच्चे स्कूल जाने की जिद करते हैं तथा स्कूल में पढ़ाने की आवाज आती है। शिक्षिकायें भी समय से आती हैं।

विद्यालयों का बदलता स्वरूप

चहारदिवारी विहीन, जर्जर विद्यालय भवन, अनाकर्षक विद्यालयों की दशा को देखकर डायट लखनऊ ने बीड़ा उठाया प्रा0 वि. धावां को आदर्श रूप में विकसित करने का। परिणाम स्वरूप सभी डायट मेन्टर्स ने अपने-अपने विकास खण्डों में एक-एक विद्यालय को आदर्श रूप में विकसित किया। तीन वर्ष की परियोजना अवधि की एक मुश्त विद्यालय विकास अनुदान की राशि 15000/- से विद्यालयों की मरम्मत, सफेद बिरला सीमेन्ट से रंगाई पुताई, हरी पट्टी युक्त कक्षा-कक्ष। प्रत्येक कक्ष में बच्चों के बैठने के लिए रंगीन चटाइयां, शिक्षकों के लिए प्लास्टिक की कुर्सी मेज, बच्चों में स्वच्छता का बोध कराने के लिए दीवार पर लगा दर्पण, कक्षाओं में विषय एवं कक्षानुसार आकर्षक चार्ट, ग्लोब, मानचित्र आदि तथा प्रधानाध्यापक कक्ष में सनमाइका टॉप की मेज, शीशा लगी अलमारी (पुस्तकों एवं खेल के सामान रखने के लिए) स्टील की अलमारी, बाल गणना, उपस्थिति, समय सारिणी आदि के चार्ट से सुसज्जित कक्ष, परिसर की स्वच्छता, रखरखाव, विद्यालय का मान चित्रण आदि करवाया गया। ब्लाक स्तरीय शिक्षक प्रशिक्षण के दौरान कक्षा शिक्षण के अभ्यास हेतु शिक्षक वहीं जाते हैं जिससे शिक्षक अपने विद्यालय को भी उसी प्रकार सुसज्जित कर सकें। सभी विद्यालयों को प्रतिवर्ष 5000/- की धनराशि दी जा रही है परिणाम स्वरूप आज विद्यालय रंगे पुते, हरी पट्टी युक्त, स्वच्छ एवं बच्चों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे हैं।

विद्यालय विकास अनुदान

- प्रत्येक प्रा0वि में रू0 5000/– प्रतिवर्ष का अनुदान
- प्रथम चरण में 1146 स्कूलों को वर्ष 2000–2001 में रू0 5730000/– का अनुदान दिया गया।
- द्वितीयचरण में वर्ष 2001–2002 में विकास अनुदान की द्वितीय किस्त भी विद्यालयों को दी जा रही है।
- 10 प्रा0वि0 विद्यालयों में तीन वर्ष की एक मुश्त अनुदान देकर डायट द्वारा माडल स्कूल बनाये गये।
- नगर के 10 विद्यालयों में 2 वर्ष की मुश्त धनराशि देकर बिजली फिटिंग एवं कनेक्शन की व्यवस्था की जा रही है।

शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण

इस मनोवैज्ञानिक तथ्य से हम सभी परिचित हैं कि सुनने की अपेक्षा देखना, देखने की अपेक्षा, एक साथ सुनना व देखना, स्वयं उसे करके देखना, सीखने-सिखाने पर बहुत प्रभाव डालते हैं। इसलिए हमने टी.एल.एम. निर्माण को टीओटी प्रशिक्षण का एक अभिन्न अंग माना। इसके प्रथम चरण में डायट में आयोजित कार्यशाला में चयनित शिक्षक प्रशिक्षक, बीआरसी समन्वयक , डायट मेन्टर्स आदि शामिल हुए। इस कार्यशाला में सभी विषयों के पाठ सम्बोधों से सम्बन्धित पाठ सामग्री तैयार की गई। अन्तिम दिवस एक टीएलएम प्रदर्शनी भी लगाई गई जिसमें सभी समूहों ने अपने द्वारा निर्मित सामग्री को सूचीबद्ध करने के साथ प्रयुक्त सामान एवं लागत के बारे में बताया। इसके बाद बारी थी टीएलएम निर्माण को शिक्षक प्रशिक्षण में क्रियान्वित करने की। शुरू में तो शिक्षक संकोच वश किसी भी क्रियाकलाप, गतिविधि में आगे बढ़कर शमिल नहीं होते किन्तु धीरे-2 उनकी सृजनात्मकता बढ़ती गई। कक्षा शिक्षण अभ्यास से पूर्व

टी.एल.एम. प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए निदेशक जनशाला श्रीमती कल्पना अवस्थी एवं निदेशक एस.सी.आर.टी. श्री शरदिन्दु जी

प्रत्येक प्रशिक्षण फेरे में समूहवार विषयाधारित शिक्षण सामग्री निर्माण की जाती। भाषा, गणित, विज्ञान परिवेशीय अध्ययन के पाठ सम्बोधों की विविध प्रकार की सामग्री प्रतिभागियों ने न केवल बनाई बल्कि कक्षा शिक्षण अभ्यास में उसका प्रभावी प्रयोग किया। प्रशिक्षण के अन्तिम दिवस विकास खण्ड सरोजनीनगर में टीएलएम प्रदर्शनी देख कर श्री श्याम किशोर यादव विधायक सरोजनीनगर की प्रतिक्रिया थी कि यदि हमारी कक्षाओं में सहायक शिक्षण सामग्री की सहायता से पढ़ाया जाय तो बच्चे के लिए कक्षा का आकर्षण बढ़ जायेगा। जनशाला द्वारा प्रत्येक शिक्षक को टीएलएम निर्माण हेतु 500/- की राशि भी दी गई। परिणाम स्वरूप अब विद्यालयों का अनुश्रवण करते समय हमें शिक्षक सहायक शिक्षण सामग्री का प्रयोग करते नजर आते हैं। बच्चे भी कक्षा में रूचि लेते है जो कि उनकी नियमित उपस्थिति से ही पता चलता है।

टी.एल.एम. अनुदान

- जनपद के 2710 प्रा. शिक्षकों को प्रतिवर्ष रू. 500/– का अनुदान दिया गया फलस्वरूप शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित सामग्री का निर्माण कर शिक्षण में प्रयोग किया जा रहा है।
- विषयगत पाठ सम्बोधों से सम्बन्धित सामग्री
- कम लागत की उपयोगी शिक्षण सामग्री
- चार्ट
- चित्र
- स्थिर एवं क्रियाकारी माडल
- शैक्षिक खेल गणित, हिन्दी
- लूडो–गिनती का ज्ञान, विलोम शब्दों, पर्यायवाची शब्दों का ज्ञान
- इ0द0 सै0 ..... के ज्ञान हेतु स्पाई एबेकस
- पर्यावरण अध्ययन व विज्ञान से सम्बन्धित प्रयोग माडल आदि।

मानसिक परिवर्तन व नवीन संकल्प

बच्चों के मुख से-

हमें स्कूल आना अच्छा लगने लगा है क्यों कि हमें घर से प्लास्टिक की बोरी नहीं लानी पड़ती है। हम रंगीन चटाइयों पर बैठते हैं।

कैलाश, गणेशपुर

अब हमें स्कूल में मैडम खेल-खेल में पढ़ाती हैं।

मीता धावां

गुरूजी अब अपनी डण्डी नहीं लाते हैं।

गौतम, गोपालखेड़ा

हमने कभी पहाड़ नहीं देखा था गुरूजी ने हमें पहाड़ का मॉडल दिखाया।

सुमन, अमेठिया, काकोरी

जब गुरूजी दूसरी कक्षा को पढ़ाते हैं तो हम कोने में रखी हुए सामग्री (लर्निंग कार्नर) से सीखते हैं।

शोभा, रहमतनगर, गोसाईगंज

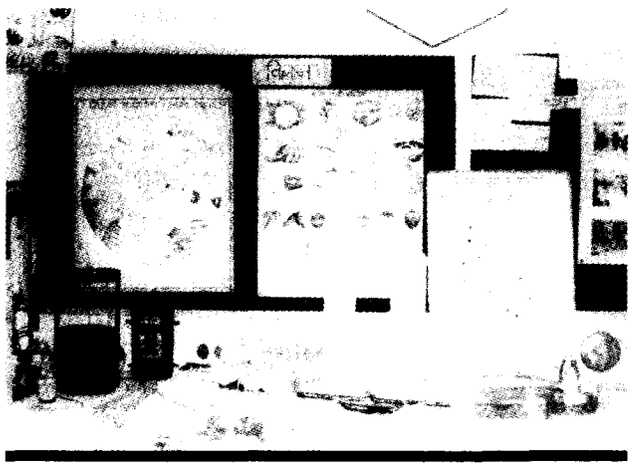

शिक्षकों की जुबान से-

हमने सर्विस में बहुत सी ट्रेनिंग करीं पर यह प्रशिक्षण उन सबसे अलग है।

निशा काले, प्रा.वि., मल्हौर

पहले विद्यालय में मैं ही अकेले घर-घर जाती व बच्चों को स्कूल लाती थी पर अब गांव के लोग अपने बच्चों को विद्यालय भेजने आते हैं।

कंचनलता, मलिहाबाद

हमारा विद्यालय एकल है। पहले मैं अकेला ही पढ़ाता लिखाता था। अब तो ज्ञानेन्द्र, चुन्नी, अल्पना, कुमुदनी मेरी मदद के लिए आते है और अच्छा पढ़ाते हैं।

हंसराज, प्रा.वि. गढ़ीकनकहा

अब बच्चे हमसे कहते हैं कि छुट्टी के दिन हमारा मन नहीं लगता आप छुट्टी नहीं किया करो।

सफिया, बजरिया

प्रशिक्षण लेने के बाद से हमारी हमेशा यही कोशिश रहती है कि बच्चों को हर दिन कुछ नया ज्ञान दे सकूं।

अनवार अहमद, अल्लूनगर

शिक्षक प्रशिक्षण से पहले हम सोचते थे कि बूढ़ा तोता क्या राम-राम रटेगा पर प्रशिक्षण ने हमें नई सोच व शिक्षण की रोचक विधायें दीं अब पढ़ाना हमें भी अच्छा लगने लगा है।

सन्तोष, नीलम, मलेसेमऊ

ग्राम शिक्षा समितियों का प्रशिक्षण

जागरूक हुआ समुदाय

शिक्षा के परिदृश्य को बदलने के लिए यह जरूरी है कि जन-जन को इस योजना और उसके क्रियान्वयन में उनकी भागीदारी को बताया जाए वस्तुतः यही जनशाला कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य भी है। इस हेतु प्रत्येक ग्राम शिक्षा समिति व उसके सहयोगियों का त्रिदिवसीय प्रशिक्षण प्रत्येक विकास खण्ड के हर गांव में प्रशिक्षित सन्दर्भ दाताओं, बी.आर.सी.सी. ए.बी.एस. ए., एन. पी.आर.सी.सी. डायट मेन्टर द्वारा आयोजित किया गया।

एक झलक ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण की

स्थान प्रा.वि.जिन्दौर, मलिहाबाद
तारीख 9 मई 2001

प्रशिक्षित सन्दर्भ समूह ने विद्यालय के शिक्षकों व बच्चों के साथ गांव का भ्रमण अभियान गीत गाते हुए किया। गांव के कुछ लोग हमारे इस समूह में आ मिले। गांव की दीवारों पर उत्साही युवकों के साथ मिलकर नारे लेखन का कार्य किया गया।

शुरू में ग्रामवासियों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। किन्तु भ्रमण के दौरान उनसे व्यक्तिगत वार्ता करके इस योजना व उसके द्वारा मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी देते हुए प्रशिक्षण स्थल पर आने के लिए आमन्त्रित किया। विद्यालय न आने वाली बालिकाओं की माताओं व विकलांग बच्चों की माताओं की विशेष

ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण

- ग्राम शिक्षा समितियों को क्रियाशील करने के लिए तथा समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जनशाला द्वारा विभिन्न चरणों में प्रशिक्षण प्रदान किये गये।
- प्रत्येक ब्लॉक के सहायक बेसिक शिक्षा अधिकारी डायट मेन्टर व नेहरू युवा केन्द्र के कुल 28 सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान कर डीआरजी का गठन किया गया।
- वीईसी प्रशिक्षण का ट्राईआउट 3 ग्रामों में दिनांक 10–01 से 12–01 तक भटगांव, जिन्दौर व सालेहनगर में किया गया।
- ब्लाक स्तर पर ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों व उत्साही महिला पुरूष प्रेरक समूह जिसमें 25–28 सदस्य प्रति विकास खण्ड के सदस्यों को 6 फेरों में प्रशिक्षित किया गया।
- प्रत्येक ग्राम सभा हेतु एन पी आर सी सी को 1150/– की धनराशि प्रशिक्षण हेतु उपलब्ध करायी गई।
- 8 विकास खण्डों की 507 ग्राम समिति में त्रिदिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया अद्यतन सभी ग्राम शिक्षा समितियां प्रशिक्षित की जा चुकी है।

आग्रह करके प्रशिक्षण स्थल पर लाया गया। प्रशिक्षण स्थल पर नारों व अभियान गीत की आवाजों को सुन कर ग्रामवासियों की काफी भीड़ जुट गई। उपस्थित समुदाय से नवचेतना लाने के लिए विषयों पर चर्चा वार्ता की। ग्राम शिक्षा समिति व समुदाय सदस्यों को उनके दायित्वों से परिचित कराया व इस शैक्षिक अभियान में आगे बढ़कर हाथ बढ़ाने के लिए अभिप्रेरित किया।

समुदाय की जुबान से -

साहब, अब तो स्कूल अपना लगने लगा है। बच्चे भी स्कूल जाने की जिद करते हैं।

राजाराम, माल

स्कूल से लौटकर बच्चे बताते हैं कि स्कूल में खेल-खेल में पढ़ाया जाता है जो एक अच्छी बात हैं। हम तो चाहेंगे कि ऐसी योजना हमेशा चले।

भागीरथ, काकोरी

पहले हमारी बिटिया ऐसी ही स्कूल भाग जावत रही अब तो मुंह धोय के कंघी करिके स्कूल जावत है।

समीना, मलिहाबाद

स्कूल की मरम्मत व रंगाई-पुताई के बाद हमको हमेशा यही लगता रहता है कि स्कूल गंदा न हो जाए तो हम इसकी रखवाली करते हैं।

रामप्यारी, बेहसा

एम.टी.ए./पी.टी.ए. प्रशिक्षण

अभिभावकों, विशेषकर महिलाओं को विद्यालयों से जोड़ने के लिए एम.टी.ए./पी.टी.ए. को प्रभावी प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता थी। वस्तुतः बच्चे के जीवन को संवारने में माता की अहम भूमिका होती है। यदि माताओं को विद्यालयों से जोड़ दिया जाय तो शिक्षा के प्रति बच्चों से जुड़ी आवश्यकताओं को जुटाना आसान हो जाता है। रिव्यु मिशन ने भी अपनी रिपोर्ट में भी एम.टी.ए./पी.टी.ए. के प्रशिक्षण पर बल दिया था। इसे सम्पन्न कराने हेतु सर्वप्रथम ब्लाक स्तरीय सन्दर्भदाताओं का प्रशिक्षण डायट पर सम्पन्न कराया गया।

एक नया प्रयोग :- विद्यालय स्तरीय प्रशिक्षण में इस बार एक नया प्रयोग किया गया। यह सुनिश्चित किया गया कि विद्यालय स्तर पर एक प्रशिक्षक एन.पी.आर.सी. समन्वयक तथा दूसरे प्रशिक्षक के रूप में समुदाय की कोई उत्साही महिला जैसे ग्राम शिक्षा समिति की सदस्या, ग्राम प्रधान या ग्राम पंचायत की सदस्या, महिला मंगल दल की सदस्या आदि होगी।

धारणा यह थी कि जब समुदाय का व्यक्ति माताओं से विद्यालय के विकास तथा बच्चों की उपलब्धि के बारे में बात करेगा तो उनकी बात अधिक असर कारक होगी। यह धारणा सही साबित हुई और समुदाय के प्रशिक्षकों द्वारा सभी विद्यालयों में प्रशिक्षण सम्पन्न किये जा रहे हैं।

मातायें भी जुड़ी स्कूल से

विकासखण्ड काकोरी जहॉ दिनांक 29.01.02 को प्राथमिक विद्यालय अमेठिया में एम.टी.ए, पी.टी.ए. प्रशिक्षण आयोजित किया गया। एन.पी.आर.सी..सी. अली किशवर ने अपनी सहयोगी अध्यापिका श्रीमती रूही सिद्दीकी के साथ प्रशिक्षण व्यवस्था की। ग्राम प्रधान श्रीमती रचना गांव के भ्रमण में सबसे आगे रहीं ओर स्वयं माताओं व अभिभावकों को विद्यालय के प्रशिक्षण में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया। कक्ष में बैठक व्यवस्था 25-30 लोगों के लिए पर्याप्त है किन्तु प्रशिक्षण में 42 लोग उपस्थिति हुए जिसमें महिलायें अधिक रहीं। अली किशवर जी प्रशिक्षण की सामान्य जानकारियों व परिचय के बाद वार्ता शुरू करते हैं। जब शक्ति की माता राधा रानी से पूछते हैं कि उन्हें अपने गांव की कोई अच्छी घटना बतायें तो उन्होंने पहले तो हंसते हुए मना किया फिर काफी कहने के बाद बोली कि हमारे गांव की कोई ठाकुर की बिटिया ट्रेक्टर चलाकर खेत जोतने लगी है और जब पूछा गया तो और कोई लड़की भी ऐसा करती है तो सबने नहीं में सिर हिला दिया। इसी को आधार बनाते हुए सन्दर्भ समूह चर्चा करता है कि महिलाओं का शिक्षित होना, जागरूक होना अपनी स्थिति के अच्छे और बुरे होने के कारणों को जान कर उनको बेहतर बनाने की कोशिश करना अपने हक के लिए आवाज उठाना क्यों जरूरी है। जब इन

स्थितियों पर चर्चा वार्ता की जा रही है तो हम पाते हैं कि सभी महिलायें चाहे वो राम देवी हो या शान्ती देवी या जेबा कहीं न कहीं, किसी रूप में इस बात को मानती हैं कि इस पिछड़े पन की वजह वो खुद हैं। जब समूहवार रोल प्ले की बारी आती है तो हम पाते हैं कि राम जीवन बालिकाओं के अधिकार पर लधु नाटिका प्रस्तुत करते हैं तो शन्नों जी का समूह दहेज न देने पर संवाद प्रस्तुत करतीं हैं। सभी इस बात पर एक मत है कि अगर महिला स्वयं जागरूक हो तो उसे दिक्कते कम आती हैं। प्रशिक्षण की समाप्ति पर अनौपचारिक वार्ता में राधा रानी, शन्नों, सफीना और विमला कहती हैं कि अब स्कूल की हर बैठक में वह जरूर आयेंगी क्योंकि उन्हें लगता हैं कि अब स्कूल में बच्चों की पढ़ाई लिखाई पर पहले से ज्यादा तथा साफ सफाई पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। प्रशिक्षण समूह के साथ हम भी आशा करते हैं कि आने वाला कल नई तरक्की व नई सोच लेकर आयेगा।

एम.टी.ए./पी.टी.ए. प्रशिक्षण

- जनपद के 1146 प्राथमिक विद्यालयों में एम.टी.ए./पी.टी.ए. का गठन किया गया।
- प्रथम चरण में तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आयोजन डायट में किया गया जिसमें प्रत्येक विकासखंड एवं नगर क्षेत्र के तीन–तीन मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षित किये गये।
- द्वितीय चरण में प्रत्येक विकासखंड में 25–30 सदस्यों (एन.पी.आर.सी. समन्वयक + उत्साही महिला अभिभावक) का प्रशिक्षण आयोजित कर बी.आर.जी. (ब्लॉक रिसोर्स ग्रुप) प्रशिक्षित किये गये।
- प्रशिक्षित बी.आर.जी. द्वारा प्रत्येक प्रा0वि0 में दो दिवसीय एम.टी.ए./पी.टी.ए. प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे हैं।
- अद्यतन जनपद के 300 प्रा0वि0 में एम.टी.ए./पी.टी.ए. प्रशिक्षण आयोजित किये जा चुके हैं।

समुदाय ने भी ली जिम्मेदारी

1. हमें ग्राम शिक्षा समिति के सदस्यों ने अनुरोध किया कि उनके प्रा.वि. सराय प्रेम बाजार में शौचालय और पानी की व्यवस्था नहीं है। हमने अपनी कल्याण निधि के समक्ष यह प्रस्ताव रखा और विद्यालय में शौचालय तथा नल लगवाया।

   सदस्य रोटरी क्लब, लखनऊ

2. ग्राम शिक्षा समिति और समुदाय के अन्य सदस्यों ने हमसे (सामाजिक कल्याण अधिकारी) सम्पर्क करके अनुरोध किया कि हमारे विद्यालय में बच्चों के पास बैठने के लिए व्यवस्था नहीं है। अतः हमने टीम के साथ सर्वे करके विद्यालय में टाटपट्टी के अलावा शैक्षणिक सामान - फल सब्जियों के चार्ट प्रा.वि. सेमरा एवं प्रा. वि. धावां को प्रदान किया। इसके अतिरिक्त प्रा. विद्यालय धावां में चहार दीवारी, ग्रिलिंग एवं शिक्षकों के लिए लकड़ी की मेजकुर्सी प्रदान की।

   श्रीमती प्रतिमा शर्मा, टेल्को चिनहट, लखनऊ

3. प्रधानाध्यापक ने हमसे सम्पर्क करके कहा कि जुग्गौर के प्रा. विद्यालय में अधिकांश बच्चों के पास स्कूल बैग नहीं है। हमने प्रा. वि. जुग्गौर-1, जुग्गौर-2, नवीकोट नन्दना के बच्चों को स्कूल बैग व पाठ्य पुस्तकें वितरित की।

   इफको, चिनहट, लखनऊ

4. सरोजनी नगर विकास खण्ड में संचालित टी.ओ.टी. प्रशिक्षण के समापन अवसर पर मैं आमंत्रित किया गया था। मैं इस जनशाला कार्यक्रम से अत्याधिक प्रभावित हुआ। मैंने टी.एल. एम. प्रदर्शनी भी देखी। मैंने अपनी विधायक निधि से प्रा. वि. भटगांव के बच्चों के लिए चार झूले लगवाये।

   श्याम किशोर यादव, क्षेत्रीय विधायक, सरोजनी नगर

5. हमारे विद्यालय में चहार दीवारी नहीं थी। हमने अपने ग्राम प्रधान से अनुरोध किया कि विद्यालय भवन के चहार दिवारी बनाने के लिए कुछ प्रयास करें। प्रधान जी ने विद्यालय की चहार दीवारी बनवाई और रंगाई पुताई कराई।

   प्रधानाध्यापक, शिवपुरी, बी.के.टी.

6. हमारा विद्यालय बिना रंगाई पुताई के था। ग्राम प्रधान से अनुरोध करने पर उन्होंने स्वनिधि से विद्यालय की रंगाई पुताई कराई। हम सबने मिलकर विद्यालय में आदर्श वाक्य लेखन कार्य किये। विद्यालय विकास अनुदान राशि से मैंने शिक्षण सामग्री, विद्यालय साज सज्जा का सामान खरीदा।

अरूण बाला, प्रधानाध्यापिका, गणेशपुर, चिनहट

7. अब इस विद्यालय का कायाकल्प हो गया है। विद्यालय सुन्दर तथा आकर्षक हो गया है। नामांकन इतना है कि बच्चों को बैठने की जगह नहीं है। इसलिए मैं विद्यालय के बंगल की जमीन, अतिरिक्त कक्ष बनवाने के लिए दान में देता हूँ।

राकेश जायसवाल, ग्राम प्रधान, रहमतनगर

स्कूल चलो अभियान

बच्चे स्कूल चले .....

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 45 में नीतिनिर्देशक सिद्धान्तों के अन्तर्गत 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की सुविधा सुलभ कराने का संकल्प व्यक्त किया गया है इसी संवैधानिक संकल्प की पूर्ति हेतु माह जुलाई 2001 में "स्कूल चलो अभियान" को दो चरणों में संचालित किया गया-

- 01.07.2001 से 15.07.2001 तक वातावरण सृजन, जनसम्पर्क तथा स्कूल न जाने वाले बच्चों की पहचान कर बाल गणना को अद्यतन किया गया।
- 16.07.2001 से 31.07.2001 तक स्कूल न जाने वाले बच्चों का नामांकन किया गया।

अभियान के प्रथम चरण की गतिविधियां

- स्कूल चलो अभियान का शुभारम्भ वातावरण सृजन से किया गया। जनपद मुख्यालय के अतिरिक्त विकास खण्ड स्तर पर भी शिक्षा के प्रति जनजागृति उत्पन्न करने के लिए प्रभात फेरी निकलवाई गई। इसी क्रम में विद्यालयों के सभी छात्र एवं अध्यापकों ने अपने गांवों में इसी प्रकार की प्रभात फेरी निकाली। प्रभात फेरी में शिक्षा के महत्व सम्बन्धी नारों, बैनर, नुक्कड़ नाटक तथा शिक्षा सम्बन्धी गीतों आदि का प्रयोग किया गया।
- ग्राम प्रधानों की अध्यक्षता में ग्राम शिक्षा समितियों, ग्राम सभा तथा अभिभावकों की संयुक्त बैठकें कराई गयीं जिसमें यह संकल्प दिलाया गया कि वे अपने गांव में रहने वाले समस्त स्कूल जाने योग्य बच्चों विशेषतया बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित करायें।
- अध्यापकों द्वारा अपने विद्यालय की सीमा अन्तर्गत विद्यालय न जाने वाले बच्चों का चिन्हांकन किया गया।

अभियान के द्वितीय चरण में की गयी कार्यवाही

- सर्वे के माध्यम से की गई बालगणना के अनुसार स्कूल न जाने वाले बच्चों का नामांकन कराया गया।
- ऐसे बच्चों को विद्यालयों में पुनः प्रवेश दिलाया गया जिन बच्चों ने किसी कारण से बीच में शिक्षा छोड़ दी थी।
- प्रतीक स्वरूप समारोह आयोजित करके बच्चों को निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें वितरित की गयी।
- प्रयासों के इसी क्रम में माननीय मुख्यमंत्री जी ने शिक्षा के बारे में जन समुदाय की आमधारणा को बदलने का आह्वान किया। जिसके फलस्वरूप के. डी. सिंह बाबू स्टेडियम में उपस्थित लगभग दस

हजार लोगों ने संकल्प लिया कि 30 जुलाई 2001 तक 6 से 11 वयवर्ग का प्रत्येक बच्चा विद्यालय में अवश्य आयेगा तथा अपनी शिक्षा पूरी करेगा।

- परिणाम स्वरूप लखनऊ में प्राथमिक पाठशालाओं में आज 90 प्रतिशत बच्चे शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।

अन्तर्देशीय पत्र तथा पोस्टकार्ड के माध्यम से भी जनजगारण कार्यक्रम चलाया गया तथा हर बच्चे को प्राथमिक शिक्षा दिलाने हेतु प्रेरित किया गया।

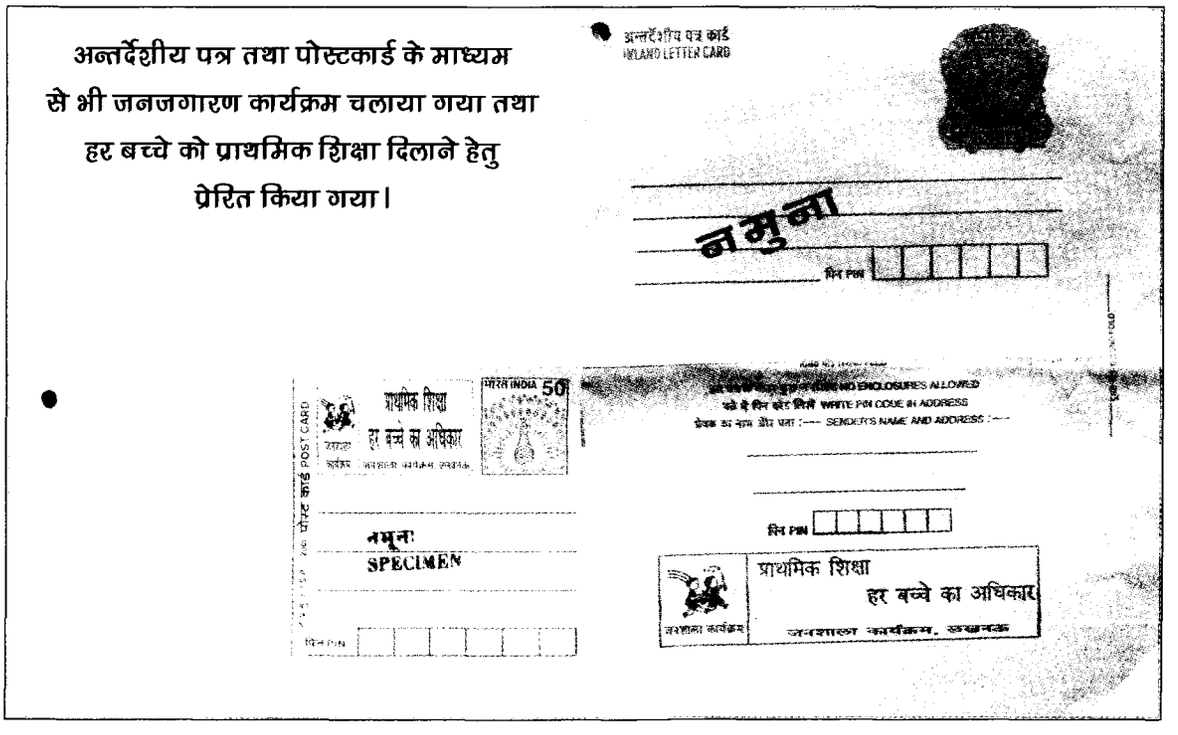

कला जत्था

गीत संगीत एवं नाटक, जनमानस के अन्तर्मन को झकझोरने का एक सशक्त माध्यम है। जनशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत हमने इस माध्यम का प्रयोग गावों में शिक्षा के प्रति जागरूकता लाने, बच्चों विशेषकर बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराने। समुदाय को विद्यालयों से जोड़ने के लिए किया।

सर्वप्रथम लखनऊ में 12 मास्टर ट्रेनर तैयार किये गये जिनका प्रशिक्षण प्रसिद्ध रंगकर्मियों द्वारा सम्पन्न किया गया। ये मास्टर ट्रेनर्स दो स्तरों पर महत्वपूर्ण कार्य कर रहे है।

1. कम नामांकन वाले गावों में अपने कार्यक्रम प्रदर्शित करना
2. ब्लाक स्तर पर कला जत्थों को प्रशिक्षित करना

प्रभावी संवाद लेखन तथा सफल प्रस्तुतियों ने इन जत्थों को बहुत चर्चित कर दिया। 'कला जत्था' ने गांव-गांव में जन चेतना व जन जागरण किया। शहर की मलिन बस्तियों में भी कला जत्था ने नुक्कड़ नाटक, अभिनय, गीत को माध्यम बनाकर बालिकाओं की स्थितियों पर संवेदनशीलता, बेटी की शिक्षा, स्कूल की ओर जैसे कई मुद्दों को उठाया। कला जत्था की प्रस्तुतियां इतनी प्रभाव पूर्ण थीं कि उपस्थित जन समुदाय भाव विह्वल हो उठता। ग्राम ससपन तारीख 19 मई ग्राम शिक्षा समिति प्रशिक्षण के अन्तिम दिन कला जत्था की प्रस्तुति 'बेटी की शिक्षा' से ग्राम वासी राम दुलारी इतनी भावुक हो उठी कि प्रस्तुति की समाप्ति पर खड़े होकर बोली 'ई सब तो हमरे हिंया भी होत है हमऊ पढ़े लिखे नहीं हमरे ऊ बचवा को पढ़ावै कौ भेजत हैं पर बिटिया को नाहीं कहत हैं कि घर को देखी आज हम फैसला करब हमैं कुसुमा को पढ़ावै का है चाहे जा होय।

सिर्फ रामदुलारी ही नहीं कमोबेश मोहनलालगंज के राम किशोर व किशनू, चिनहट की सुभद्रा व शफीक, गोसाईगंज के छोटे और कमरून्निसा की प्रतिक्रियायें भी कुछ ऐसी ही थीं। परिणामतः स्कूलों के नामांकन में वृद्धि हुई। बच्चे विशेषकर लड़कियां नियमित विद्यालय आ रही हैं।

ग्रीष्मकालीन शिविर

विकासखण्ड माल- जनपदका सबसे दूर व विकास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ। साथ ही जहाँ बालिका नामांकन की दर न्यून थी। विकास खण्ड के उन 5 गाँवों सालेहनगर, अहिडर (राईहार), कलुवाखेड़ा, सिसवारा, रान्डाखेड़ा (ससपन) में दस दिवसीय ग्रीष्मकालीन शिविरों का संचालन किया गया। प्रथम चरण में विशेषज्ञ जनशाला द्वारा इन ग्रामों के प्रा0वि0 के सहायक अध्यापक व चयनित प्रेरक दीदी जो कि उसी ग्राम की वासी थी को 5 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया। द्वितीय चरण में प्रेरक दीदी द्वारा

दस दिवसीय शिविर का संचालन किया गया। ग्रीष्म शिविर पहले ही दिन से सफल था क्योंकि लड़कियों की संख्या बहुत थी। किसी भी शिविर में 40-45 से कम बालिकायें नहीं थीं। अधिकतर लड़कियाँ ऐसी थीं जो कभी स्कूल नहीं गई थीं क्योंकि गाँव में स्कूल नहीं था या किसी कारणवश ड्रॉपआऊट थीं। इस शिविर में बच्चों की गीत अभिनय आदि के द्वारा पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करने के साथ-साथ इन्हें मुखौटे, पेपर गुड़िया, बन्दनवार, कढ़ाई के टाँके, मिट्टी से गोलियाँ/आकृतियाँ बनाना सिखाया गया। जिन्हें बनाने में बालिकाएँ बड़ी रूचि लेती, बाद में उन्हें रंगती। प्रतिदिन इन शिविरों का अनुश्रवण परियोजना विशेषज्ञ श्री समर जैदी द्वारा किया जाता इनके सहयोग के लिए डायट प्रवक्ता भी साथ होते। राष्ट्रीय परामर्शी जनशाला श्री विनोबा गौतम ने भी इन कैम्पों का भ्रमण किया और आयोजन पर प्रसन्नता व्यक्त की। खुशी इस बात की है कि इन शिविरों में नामांकित सभी बालिकाओं का नामांकन नये सत्र में निकट के प्रा0वि0 में हो चुका है। लेकिन कलुवाखेड़ा की बालिकाओं के लिए वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र खोलने के लिए हम प्रयासरत हैं।

बाल मेला

प्राथमिक विद्यालयों का स्तर ऊंचा उठाने तथा उन्हें भी प्राइवेट विद्यालयों की पंक्ति में खड़ा करने के उद्देश्य से यह तय किया गया कि प्रत्येक विद्यालय में बाल मेले का आयोजन किया जाय। इन मेलों के आयोजन हेतु निर्देश दिये गये कि

- व्यवस्थित रूप में मेले की पूर्व तैयारी की जाय
- बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम तैयार कराये जाय
- कक्षावार खेलों की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाये
- कक्षावार शैक्षिक प्रतियोगिताएं जैसे सुलेखा, अन्त्याक्षरी, कविता, गीत, कहानी आदि आयोजित किए जाए।

उक्त प्रतियोगिता में विजयी बच्चों को पुरस्कृत करने के लिए व्यापक मेले का आयोजन किया जाय जिसमें सभी अभिभावक शामिल हों। अभिभावकों के समक्ष सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रदर्शित किया जाए तथा बच्चों को पुरस्कृत किया जाय।

जनपद में 17 तथा 18 जनवरी 2002 को एक साथ सभी विद्यालयों में बाल मेला आयोजित किया गया जिसमें विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं के साथ बच्चों ने अपनी दुकानें लगाई। बच्चों, शिक्षकों एवं अभिभावकों का उत्साह देखने लायक था। प्रस्तुत है एक विद्यालय में आयोजित मेले की झलकियां प्रधानाध्यापिका श्रीमती गीता कुरील की कलम से

प्राथमिक विद्यालय - धोधन खेड़ा,
क्षेत्र सरोजनी नगर, लखनऊ

बाल मेले के लिए किये गये प्रयास

दिनांक 17-01-02 को प्रा. वि. धोधन खेड़ा में

जनशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत एक बाल मेला आयोजित करने का निर्देश प्राप्त हुआ। मेला आयोजित करने से पूर्व ग्रामशिक्षा समिति की बैठक आयोजित की गई जिसमें ग्राम प्रधान सहित शिक्षा समिति के सभी सदस्यों ने भाग लिया। ग्राम प्रधान जी की अध्यक्षता में बाल मेले की एक विस्तृत योजना बनाई गई। एक सप्ताह पूर्व से तैयारी प्रारम्भ की गई। विद्यालय परिसर में उगे अनावश्यक पतावर तथा ऊँचे-नीचे स्थान को समतल किया गया। शिक्षा समिति के सदस्य श्री शिवराज, बाबादीन, रामनरायण, घसीटेलाल भारती तथा कक्षा पांच के कुछ विद्यार्थियों ने भी इस कार्य में सहयोग दिया। ग्राम प्रधान जी ने हर सम्भव मेले का सफल बनाने का सभी से अनुरोध किया।

ग्राम वासियों का सहयोग

प्रत्येक ग्राम वासी ने सभी कार्यों में सहयोग दिया। सभी अभिभावकों ने बच्चों को दुकाने लगाने हेतु सामान उपलब्ध कराया। ग्राम के अनेकों नवयुवकों ने स्वागत द्वार बनाने हेतु अशोक के पत्ते, सीढ़ियां

इत्यादि एकत्र की। विद्यालय में पहुंचने के लिए स्वागत द्वार का निर्माण किया गया। विद्यालय परिसर के चारों ओर चूने का छिड़काव किया। स्वागत द्वार से लेकर विद्यालय तक चूने की रेखायें खींच कर मार्ग बनाया गया तथा WELCOME लिखा। समस्त ग्रामवासी समय-समय पर आकर मेले की जानकारी लेते रहे। एक दिन पूर्व से ही मेले के लिए साज-सज्जा प्रारम्भ हो गई थी। रखवाली हेतु दो ग्रामवासी तख्त डालकर विद्यालय में ही रूके क्योंकि विद्यालय गांव से दूर है। समस्त ग्रामवासी अपने-अपने घरसे तख्त, मेज, स्टूल, तम्बू तथा माइक इत्यादि लाये। मंच इत्यादि बनाकर झंडियों और गुब्बारों से विद्यालय परिसर को सुसज्जित कर दिया। एक नवयुवक विजय कुमार ने सुझाव दिया कि मैं विद्यालय हेतु कुछ नया करना चाहता हूं मैने कहा स्वागत है। उन्होंने कुछ सुन्दर और आकर्षक पौधों तथा उनकी शाखाओं को विद्यालय प्रांगण के चारों ओर लगा दिया। विद्यालय परिसर की छटा देखते ही बनती थी। ग्राम वासियों का सहयोग काबिले तारीफ था। ऐसा प्रतीत हो रहा था समस्त

ग्रामवासी किसी बारात के स्वागत हेतु तैयारी कर रहे हैं।

बाल मेले में माता-शिक्षक संघ का सहयोग

विद्यालय में दिसम्बर माह में माता शिक्षक संघ का गठन किया गया है जिसकी अध्यक्षा श्रीमती सुषमा भारती हैं। इनका पुत्र कक्षा 4 में शिक्षा प्राप्त कर रहा है। श्रीमती भारती डी.ओ. डब्ल्यु. सी. की सदस्या है। ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करती हैं। इनके द्वारा एक स्वास्थ्य शिविर लगाया गया जिसमें उन्होंने अनेकों पोस्टर्स एंव बुकलेट्स के द्वारा माताओं तथा मेले मे आने वाले लोगों को एड्स, शिशुओं को होने वाले रोग उनके उपचार, टीकाकरण, प्रसव तथा प्रसव में प्रयोग होने वाली वस्तुओं एवं स्थान की स्वच्छता तथा रक्त दान एवं शारीरिक स्वच्छता के विषय में अनेकों जानकारी दी। माता शिक्षक संघ की सभी महिलायों ने ढोलक, मंजीरा बजाकर लोकगीत गाया।

पढ़ो पढ़ाओं सुख में जीवन होगा।
नाम वतन का रोशन होगा।

शिक्षा प्रद गीतों के द्वारा उन्होंने छात्रों का मार्ग प्रशस्त किया। विद्यालय के प्रत्येक कार्यक्रम में तन, मन, धन से योगदान देने का दृढ़ निश्चय किया।

ग्राम शिक्षा समिति का सहयोग

ग्राम शिक्षा समिति इस विद्यालय में नहीं बनी थी। 22 दिसम्बर 2001 को मेरी नियुक्ति इस विद्यालय में प्र. अ. के पद पर हुई। मैंने ग्राम शिक्षा समिति का गठन किया। समय-समय पर मैं उन्हें विद्यालय में आमंत्रित करने लगी। उनकी प्रसन्नता की कोई सीमा न रहीं मैंने उन्हें प्रेरित किया यह आपका विद्यालय है, हमारा विद्यालय है, हमारे बच्चों का विद्यालय है। उन्होंने हर समय विद्यालय को अपना सहयोग देने का आश्वासन दिया अैर इसका फल मुझे 'बाल मेले' के रूप में देखने को मिला। समिति के सदस्य जी.एल. भारती ने अपना लाउडस्पीकर दिया, फोटाग्राफर को आमंत्रित किया। कुर्सियां, दरियां इत्यादि टेंट हाउस से लेकर आये सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। भारती जी ने बालिका शिक्षा पर एक गीत प्रस्तुत किया जो अत्याधिक

हृदय स्पर्शी था।

कइलल हम कौन कसूर पढ़इया से दूर
कइलल बाबूजी .....
भारती जी ने दूसरा लोकगीत प्रस्तुत किया
जो इस प्रकार था -
पढ़ो और पढ़ाओं, ये कहना है हमारा
पढ़े बिना नहीं होगा अब गुजारा

सभी शिक्षा समिति के सभी सदस्यों ने विद्यालय स्टाफ को धन्यवाद दिया तथा इसी प्रकार का आगे भी आयोजन करने का आग्रह किया। मेला समाप्ति के पश्चात सभी सदस्यों ने सामान को यथा स्थान पहुंचाने में मदद की।

मेले में छात्रों की भूमिका

मेले की व्यवस्था को सुचारूरूप से संचालित करने हेतु मेरे द्वारा एक 'बाल मेला कमेटी' का गठन किया गया। जिसमें सफाई, साजसज्जा, अनुशासन, व्यवस्था, जलपान, पूछताछ आदि कार्यों का विभाजन करके उनको सौंप दिया गया। बाल मेला कमेटी के अध्यक्ष मानसिंह सम्पूर्ण मेले की व्यवस्था को देख रहे थे। प्रमोद कुमार कक्षा 5 के छात्र किसी प्रकार अनुशासन हीनता न हो इस पर कड़ी नजर रखे थे। कक्षा 4 की छात्रा कलावती सम्पूर्ण सफाई देख रही थीं। स्टाल से सामान खरीदने के पश्चात दोने पत्तल इत्यादि कूड़े दान में फेंकने का निर्देश माइक से दे रही थी। सुखरानी कक्षा 4 की छात्रा आगन्तुकों को वाहन स्टैण्ड पर खड़े करने का निर्देश दे रही थीं। अनिल कुमार मेला कमेटी (उपाध्यक्ष) पूछताछ केन्द्र पर बैठकर आगन्तुकों को मेले की जानकारी दे रहे थे। सन्नों और सन्तोष ने पकौड़ियों का स्टाल लगाया। लोग गर्मागर्म पकौड़ियों का स्वाद ले रहे थे। शिवकुमारी तथा पूनम ने रसगुल्ले तथा समोसे का स्टाल लगाया। लक्ष्मी तथा जसवन्त ने चाय की दुकान लागई। राजेश ने मूंगफली की तथा अंजू और सुचेता ने टाफी और गुब्बारों की दुकान लगाई। बच्चों ने लागत से चार गुना मुनाफा कमाया। तीन बजे से खेलकूद प्रारम्भ हुए - जिसमें दौड़, कुर्सी दौड़, खो-खो, कबड्डी, वाद-विवाद, गीत, अन्त्याक्षरी

मेले का मुख्य आकर्षण

बच्चों के खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम

टी.एल.एम. स्टाल

विद्यालय का मॉडल

स्वास्थ्य शिविर

बच्चों द्वारा निर्मित मिट्टी के खिलौने मकान तथा कागज एवं दफ्ती से बने टी.एल.एम.

बच्चों द्वारा निर्मित खाद्य सामग्रियों के स्टाल।

आदि प्रतियोगिताएं हुई। खेलों में ग्रामवासियों ने भी सहयोग दिया किसी ने सीटी बजाई किसी ने विजयी बच्चों का नाम नोट किया। बच्चों की प्रसन्नता उनके चेहरों से साफ दृष्टिगोचर हो रही थी। ब्लाक समन्वयक श्री एस.के. सिंह सहायक ब्लाक समन्वयक जगदम्बा प्रसाद मेले की व्यवस्था देखकर स्तब्ध रह गये उन्होने पूरी बाल मेला कमेटी को पुरस्कृत किया न्याय पंचायत समन्वयक श्री प्रकाश चन्द्र तिवारी, संदर्भदाता श्री वी.डी. सिंह जी ने बच्चों का उत्साहवर्द्धन एवं प्रशंसा की। ग्राम प्रधान श्रीमती शान्ति देवी ने दीप प्रज्जवलित करके बच्चों को आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा दी।

मेले का प्रभाव

इस मेले का एक अच्छा प्रभाव दिखाई दे रहा था। विद्यालय समाज के एकदम निकट पहुंच गया था। ग्राम वासियों ने कहा दीदी जी ऐसा कार्यक्रम आज तक

विद्यालय मे आज तक नहीं हुआ और न ही हमें कभी आमंत्रित किया गया। ग्रामीणों ने कहा आपके आने से बच्चों और हम सभी में एक खुशी की लहर दौड़ गई है। आप इस प्रकार के आयोजन करिये हम विद्यालय के लिए देखिये क्या-क्या करते हैं। सभी अभिभावक बच्चों की प्रसन्नता में प्रतिभाग कर रहे थे। माता शिक्षक संघ द्वारा धूम्रपान से होने वाले दुष्परिणामों की जानकारी देने पर कोई भी आगन्तुक मेला परिसर में धूम्रपान करता नहीं दिखाई दिया। दूर-दूर से मेला देखने आये लोग मेले की व्यवस्था एवं बच्चों द्वारा देने वाले संदेशों की प्रशंसा करते हुए देखे गये।

उपरोक्त मेले की भाँति ही जनपद के प्रत्येक विद्यालय में बाल मेला लगाया गया जिसमें बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया जिसमें अभिभावकों का जुड़ाव विद्यालय से हुआ और बच्चों की छुपी सांस्कृतिक प्रतिभा ने भी खुले आसमान में अपने पंख फैलाये। पृथ्क-पृथ्क विकास खण्डों में अधिकारियों ने भी मेले को देखा एवं बच्चों के प्रयासों को सराहा।

ई.सी.सी.ई. के केन्द्रों में गूँजेगी बच्चों की किलकारी

डायट लखनऊ के प्रशिक्षण कक्ष में ई.सी.सी.ई का प्रशिक्षण चल रहा था। राज्य शिक्षा संस्थान इलाहाबाद से प्रशिक्षित दो डायट प्रवक्ताओं द्वारा बड़े हावभाव के साथ इंचीमिंची मकड़ा बालगीत गायन किया जा रहा था जिसे आंगनबाड़ी की सदस्यायें मनोयोग सें देखती हुई महसूस कर रही थी कि सीखने की कोई आयु नही होती है तथा आजीवन सीखने की ललक बनी रहती है।

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम कहानी विधा है। प्रतिभागियों द्वारा 'भेड़िया मेमने कौ कहानी' खरगोश बन्दर की कहानी तथा 'बहेलियां और चार दोस्त' की कहानी अभिनय के साथ प्रस्तुत की गई। छोटे बच्चों के परिचित परिवेश से सम्बन्धित कहानी का प्रस्तुतीकरण समूह में कराया गया। ऐसा आभास हो रहा था कि प्रतिभा प्रत्येक व्यक्ति में होती है। आवश्यकता है इसे निखारने की। बच्चों में स्वस्थ आदतों के निर्माण एवं नैतिक मूल्यों के विकास तथा पारिवारिक सम्बन्धों की जानकारी जब श्रीमती माया श्रीवास्तव ने पपेट के द्वारा दी तो सभी उपस्थित लोगों ने कहा कि यह प्रयास बच्चों को आकर्षित करने हेतु बहुत ही अच्छा है।

विभिन्न मांसपेशियों के विकास हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियां कराई गई जैसे 'मोर है मेरा नाम' 'हइया हो हइया' 'हम ताली बजाना जानते हैं', 'गुड़िया नाच तू छमछम आदि के द्वारा पशु पक्षियों की जानकारी, विभिन्न शहरों की प्रसिद्ध चीजों की जानकारी दी। छोटे बच्चों की स्वाभाविक रूचि खिलौने में होती है इसे ध्यान में रखते हुए साफ्ट ट्वायज में 'टेडी बियर' एवं 'पपी' बनाने में प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया एवं अतिरिक्त उत्साह दिखाया।

निरीक्षण के समय जनशाला निदेशक के साथ वरिष्ठ विशेषज्ञ ने आंगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों से जानना चाहा कि उन्होंने इस प्रशिक्षण में क्या नया सीखा तो उन्होंने बताया कि पहले हम छोटे बच्चों कौ सिखाने की नई विधियाँ नहीं जानती थी, हमारा काम सिर्फ बच्चों को बुलाकर केन्द्र लाना और पंजीरी बाँटना था, किन्तु अब हम उन्हें प्रारम्भिक ज्ञान देकर विद्यालय जाने के लिए तैयार कर सकते है। हमें पूरे वर्ष का कलेन्डर मिल जाने से हमारा काम आसान हो गया है।

इसी प्रकार का अनुभव श्रीमती मिथलेश त्रिवेदी बी. के.टी. ने बताया कि इस प्रशिक्षण को लेने के उपरान्त आंगनबाड़ी कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त हो जाने के कारण अपनी कक्षा बेहतर ढ़ंग से नियोजित कर सकेगे।

आंगनबाड़ी के सुपरवाइजर, सी.डी.पी.ओ. के विचार जानने पर पता चला कि अब उन्हें अनुश्रवण

करना आसान हो जायेगा। श्रीमती पुष्पा रायजादा सी. डी.पी.ओ. बी.के.टी. ने बताया कि इस प्रशिक्षण में दिया गया कार्यक्रम का वार्षिक कलेन्डर उनके लिए अत्यन्त उपयोगी है जिससे वे बच्चों की उपलब्धि का मूल्याकंन कर सकेंगी।

अनुश्रवण हेतु गई डायट प्रवक्ता ने पाया कि शाहपुर चिनहट में बच्चों ने अभिवादन के बाद प्रार्थना, बालगीत सुनायें। हेल्पर ने बताया, कि बच्चों को अब बुलाने नहीं जाना पड़ता है अब ये स्वयं दोड़कर आ जाते है।

ई.सी.सी.ई केन्द्र पर दी गई किट का बच्चे प्रयोग करते है। 'गुडम्बा', बी.के.टी. में बच्चे टैडी बियर से खेल रहे थे तथा गोल, चौकोर, तिकोने, वर्गाकार, आयताकार आकृतियों से अपनी कल्पना के आधार पर चित्र बना रहे थे।

इस योजना के तहत किशोरी बालिकायें, गर्भवती महिलायें, धात्री भी लाभान्वित हैं। केन्द्र में आने पर सरकार द्वारा मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी मिलती है। वे बालिकाएं जो अपने छोटे भाई-बहनों को देखने के लिए घर पर रोक ली जाती थीं वे अब विद्यालय जा सकेंगी क्योंकि इन केन्द्रों को अब प्रा. विद्यालयों में चलाये जाने की योजना है। 80 चयनित केन्द्रों पर रू 500/- के शिक्षाप्रद खिलौने भी दिये जा रहे हैं।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा प्रशिक्षण

- प्रथम चरण में डायट प्रवक्ताओं को 5 दिवसीय सन्दर्भदाता प्रशिक्षण प्रदान किया गया।
- द्वितीय चरण में विकासखण्ड माल मलिहाबाद, बी0के0टी0 के शिक्षकों, आंगनबाडी परियोजना अधिकारी/कार्यकत्री/सहायिका, मुख्य सेविका का प्रशिक्षण दिया गया। जनपद के 211 आंगनबाड़ी कार्यकत्री/सहायिकाओं को प्रशिक्षित किया जा चुका है।
- तृतीय चरण में नगर क्षेत्र के कार्यकत्री/सहायिकाओं को प्रशिक्षण दिया गया। जनपद के समस्त कार्यकत्री /सहायिकाओं को प्रशिक्षित करने हेतु 25 मास्टर ट्रेनर को डायट में प्रशिक्षित किया जा चुका है।
- सभी कार्य कत्रियों को प्रशिक्षित करने हेतु आगामी माह से ब्लाक स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किये जायेंगे।

शिक्षकों की कमी को दूर किया शिक्षा मित्रों ने

परिषदीय विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षक न होने के कारण माल विकास खण्ड सर्वाधिक प्रभावित है। इस समस्या के समाधान हेतु प्रथम वरीयता के आधार पर 117 शिक्षामित्रों का चयन किया गया। तथा उन्हें तीस दिवसीय प्रशिक्षण डायट के कुशल मास्टर ट्रेनर द्वारा दिया गया। यह तीस दिवसीय सघन प्रशिक्षण इस उद्देश्य से दिया गया कि वे विद्यालय जाकर शिक्षक की भांति अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकें।

शिक्षामित्र प्रशिक्षण

1. प्रथम चरण में डायट के तीन सन्दर्भदाताओं ने राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद में प्रशिक्षण प्राप्त किया।
2. प्रदेश के सभी जिला शिक्षा प्रशिक्षण संस्थानों के 54 प्रवक्ता व 23 समन्वयकों को डायट लखनऊ में प्रशिक्षण दिया गया।
3. लखनऊ जनपद के विकास खण्ड माल एवं मलिहाबाद के शिक्षामित्रों को डायट लखनऊ में एक माह का प्रशिक्षण दो फेरों में दिया गया।

प्रस्तुत है प्रशिक्षण की कुछ झलकियां/कार्यशैली

दिनांक 3 अक्टूबर 2001

स्थान डायट -लखनऊ का सभागार

शिक्षामित्रों के लिए आयोजित प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का पंजीकरण किया जा रहा है। कुछ शिक्षामित्र सकुचाये, सहमे से प्रवेश करते हैं तो कुछ अमरेन्द्र, प्रदीप, नागेन्द्र जैसे नेताओं वाले अन्दाज में। परिचय के बाद जब उन्हें पता चलता है कि यह प्रशिक्षण प्रातः 6 बजे से रात्रि 8 बजे चलेगा तो उनके होश उड़ जाते हैं। एक साथ बोले कि 'प्रशिक्षण का समय कुछ कम नहीं हो सकता'। किन्तु जब उन्हें इस प्रशिक्षण के औचित्य के विषय में बताया गया तब वे तैयार हो गये। और ये ही प्रतिभागी पूर्ण मनोयोग से प्रातःकाल योगासन एवं व्यायाम सत्र में प्रतिभाग करते। शून्य कालांश में प्रतिवेदन, भित्ति चित्रण, कहानी, कविता प्रस्तुति के साथ नीति वचन पर चर्चा करते ।

फिर-शुरू हो जाता पढ़ने पढ़ाने का काम। भाषा, गणित, पर्यावरण तथा नवाचारों के साथ स्काउट गाइड, प्रशिक्षण टी.एल.एम. निर्माण, सूक्ष्म नियोजन, शाला मानचित्रण पर खुले सदन में चर्चा वार्ता होती। पूनम, लक्ष्मी, सरस्वती, विमला, श्रीपाल, रामकुमार आदि बोलने में संकोच करते थे धीरे - धीरे झिझक छोड़कर सदन में सक्रिय हो गये।

प्रतिदिन सांय कालीन सत्र में बालिका शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, ग्राम-चेतना, प्रदूषण, आकर्षक विद्यालय,

जैसे समसामयिक विषयों पर समूह में चर्चा वार्ता होतीं। प्रत्येक समूह अपने सहयोगियों के विचारों को प्रस्तुत करने में उत्साहित रहता। बीच-बीच में शैक्षिक गतिविधियां एवं खेलकूद, क्विज कराये जाते। अभियान गीत के साथ सत्र की समाप्ति होती। कक्षा शिक्षण अभ्यास से पूर्व सभी प्रतिभागियों ने कक्षा 1 व 2 की पाठ्यपुस्तकों के आधार पर टी.एल.एम. बनाया। कक्षा शिक्षण अभ्यास हेतु शिक्षामित्रों को प्रा. विद्यालय बजरिया और प्रा.वि. नरही ले जाया गया। लालता, लालमणि, नीलम, आदित्य, रामकिशोर, आलोक, प्रेरणा ने कक्षा शिक्षण में अपनी प्रतिभा का विशेष प्रदर्शन किया। प्रशिक्षण की इस अवधि में निरीक्षण हेतु पधारे प्राइवेट रिव्यू मिशन एवं मीडिया के सदस्यों ने प्रतिभागियों से बातचीत की तथा उनके द्वारा निर्मित शिक्षणोपयोगी सामग्री को देखकर प्रभावित हुये। अन्तिम दिन प्रतिभागियों द्वारा टी.एल.एम. प्रदर्शनी लगाई गई बाद में समस्त सामग्री उन्हें कक्षा में प्रयोग करने हेतु दी गई।

शिक्षा मित्र अपने विद्यालयों में परिश्रम से पढ़ा रहे हैं। अब विद्यालय में बच्चों की नियमित उपस्थिति बढ़ी है तथा बच्चे विद्यालय आना पसन्द करते हैं। शिक्षा मित्र भी अपने कार्य को लगन और उत्साह से कर रहे हैं।

आइये कुछ शिक्षा मित्रों के अनुभव आपसे बांटे –

1. मैं पहली बार अपने गांव से आकर बाहर रही। बहुत डर लग रहा था कि पूरा एक महीना कैसे बीतेगा। प्रथम दिन जब सबसे परिचय हुआ और मैडम लोगों ने प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया तो लगा कि हम लोग शिक्षा की विधायें तो जानते ही नहीं थे। इस प्रशिक्षण से मुझमें आत्म विश्वास आया।

सन्ध्या, माल

2. हमने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की है। शिक्षक बनना चाहते थे। जब शिक्षा मित्र में चयन हुआ तो मुझे लगा कि हमारी इच्छा पूर्ण हुई। इस प्रशिक्षण में सबको प्रतिदिन बोलने का अवसर दिया जाता था। समूह चर्चायें होतीं, क्विज होती जिससे हम सभी की झिझक दूर हुई। सुबह से शाम कब हो जाती, पता ही नहीं चलता। मुझे विद्यालय में, खेल-खेल में तथा टी.एल.एम. के द्वारा पढ़ा कर बहुत अच्छा लगा।

राजश्री, माल

3. शिक्षा मित्र प्रशिक्षण के उपरान्त अब मैं विद्यालय में पढ़ाने लगी हूं। बच्चे नियमित विद्यालय आते हैं और बहुत खुश हैं। हमें भी बच्चों को पढ़ाना अच्छा लग रहा है।

नीलम, माल

4. हमारी नई मैडम जी हमारे ही गांव में रहती हैं तथा रोज स्कूल आती हैं। कहानी सुनाती है, खेल खिलाती तथा मारती भी नहीं हैं। हमें रोज स्कूल आना अच्छा लगता हैं।

विवेक, छात्र अऊमऊ, माल

कम्प्यूटर प्रशिक्षण

शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकि ने क्रांति ला दी है। शैक्षिक तकनीकि के विकास के साथ साथ कम्प्यूटर का ज्ञान प्रत्येक शिक्षक की अनिवार्य आवश्यकता बन गया है। कम्प्यूटर के ज्ञान से हम सम्पूर्ण विश्व की जानकारी घर बैठे ही प्राप्त कर सकते हैं।

जनशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों की प्रतिभा निखारने के लिये, ज्ञानवर्धन, स्थाई ज्ञान की प्राप्ति, शत-प्रतिशत नामांकन तथा छात्रों में सीखने की ललक पैदा करने हेतु विद्यालयों में कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने का निर्णय लिया गया।

विद्यालयों में कम्प्यूटर द्वारा शैक्षिक ज्ञान प्रदान करने हेतु शिक्षकों को कम्प्यूटर में प्रशिक्षण दिये जाने की आवश्यकता महसूस हुयी। इस दृष्टि से सर्वप्रथम मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षित किये जाने थे।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण -'ई-टेल टीच टु इ फ्युचर प्रोग्राम' के अन्तर्गत सर्वप्रथम डायट के दो प्रवक्ता तथा प्रा.वि. के 20 शिक्षकों को 20 दिवसीय प्रशिक्षण 'डिशनेट द्वारा महानगर में प्रदान किया गया। इस कार्यक्रम का गठन उन शिक्षकों की सहायता से किया गया जो अपनी-अपनी सृजनात्मकता की सीमाओं की चहारदीवारी से बहुत आगे ले जाकर सीमाहीन विस्तार देना चाहते हैं। शिक्षक कम्प्यूटर की तकनीकी शक्ति को शैक्षिणक अस्त्र के रूप में प्रयुक्त कर छात्रों की जिज्ञासा को जागृत कर छात्रों को ज्ञान के अथाह भंडार की ओर प्रेरित कर सकते हैं। कम्प्यूटर का प्रयोग अनुसंधान प्रकाशन एंव संचार प्रणाली में प्रयुक्त किये जाने पर स्कूलों में ज्ञान के नये आयामों को विकसित करेगा।

अब तक हम अपनेशिक्षकों को आदर्श पाठ योजना कापी, पेन एवं सहायक सामग्री के माध्यम से बनाना सिखाते थे किन्तु अब हम कम्प्यूटर के द्वारा किसी भी पाठ को अधिक बेहतर रूचिकर एवं आकर्षक तरीके से पढ़ा सकते हैं तथा छात्रों की अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति को जागृतकर कर सकते है। इस प्रशिक्षण के द्वारा शिक्षक अपने शिक्षण को अधिक प्रभावशाली एवं छात्रों के लिये ग्राह्य बना सकेंगे।

20 दिवसीय प्रशिक्षण के पश्चात हमने 57 प्राथमिक शिक्षकों को कम्प्यूटर के माध्यम से शिक्षण देने में प्रशिक्षित किया। अत्यंत प्रभावी पाठयोजनायें भाषा, गणित एवं सामाजिक अध्ययन के अंतर्गत बनवायी गई जिन्हें सी.डी. में संकलित कर लिया गया।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण अद्यतन अनवरत् रूप से दिया जा रहा हैं जिसमें 57 मास्टर ट्रेनर एवं 570 शिक्षक प्रशिक्षित किये जा चुके हैं।

शीघ्र ही विद्यालयों में कम्प्यूटर प्रेषित किये जानेकी येाजना है। वह दिन दूर नहीं जब लखनऊ जनपद के प्रत्येक विद्यालय में प्रत्येक बच्चा कम्प्यूटर के माध्यम से

शिक्षा ग्रहण कर सकेगा। कम्प्यूटर बच्चे के लिये कोई अनोखी वस्तु नहीं रहेगी। यह प्रयास प्राथमिक शिक्षा में एक अद्वितीय कदम होगा जिससे बच्चों में अन्वेषणात्मक प्रवृत्ति विकसित कर उन्हें आत्माभिव्यक्ति का अवसर दिया जा सकेगा।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण के दौरान विजिट पर पहुँची टीम ने पाया कि प्राथमिक शिक्षकों के द्वारा कक्षा 1 से 5 तक पढ़ाई जाने वाली पुस्तकों की विषयवार पाठयोजनायें कम्प्यूटर पर बनाई गई थी। अमिता, शालिनी, लता, दिनेश, सुरेश, सत्यवह, लीना का कार्य उत्तम था। संकलित सी.डी. को देखने पर पता चला कि बहुकक्षा शिक्षण पर दो कक्षाओं एवं तीन कक्षाओं को एक साथ पढ़ाने हेतु समान दक्षताओं के आधार पर पाठ योजनायें बनाई गई थी। जिन विद्यालयों में शिक्षकों की कमी है वहाँ पर यह सी.डी. बहुत ही उपयोगी होगी। विज्ञान एवं गणित के कठिन स्थलों को बहुत ही सरलतम रूप से ग्राह्य बनाया गया है।

शायद हम सोच भी नहीं सकते हैं कि हमारे ग्रामीण नौनिहाल भी कम्प्यूटर देख सकेंगे, उस पर काम भी कर सकेंगे किन्तु अब यह सपना दूर नहीं जब हमारे बच्चे भी समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चलेंगे। हमारे शिक्षकों की प्रतिभा को निखारने हेतु तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को अधिक रूचिकर एवं ग्राह्य बनाने हेतु विद्यालयों में कम्प्यूटर बहुत शीघ्र प्रदान किये जायेंगे।

प्रा0 शिक्षिका सुश्री प्रतीक्षा से जनशाला निदेशक ने कम्प्यूटर प्रशिक्षण का अनुभव जानना चाहा तो उसने बताया कि पहले दिन हमें माऊस पकड़ने पर भी डर लगता था किन्तु अब मैं आत्मविश्वास के साथ इस पर काम कर लेती हूँ। वर्ष में एक बार शिक्षकों हेतु यह प्रशिक्षण अवश्य अद्यतन करा देने हेतु अनुरोध किया।

इसी प्रकार अन्य शिक्षिकाओं ने भी बताया कि इस प्रशिक्षण से उनमें मनोबल बढ़ा है तथा शिक्षण इसके बिना अधूरा है।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण का लाभ विद्यालयों तथा बच्चों तक पहुंचाने की कार्ययोजना बनाने के उद्देश्य से निदेशक जनशाला तथा वरिष्ठ विशेषज्ञ द्वारा म0प्र0 के रायसेन जनपद के अमोढ़ा विकास खण्ड में कम्प्यूटर द्वारा विद्यालयों में बच्चों को शिक्षित करने के प्रयास का अवलोकन किया गया।

कम्प्यूटर प्रशिक्षण

प्रथम चरण में 57 मास्टर ट्रेनर इंटेल द्वारा प्रशिक्षित किये गये।

प्रत्येक मास्टर ट्रेनर द्वारा दस–दस शिक्षकों को 13 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।

अद्यतन 570 प्राथमिक शिक्षक कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं।

विकलांग परीक्षण शिविर

आंखो में चमक व होठों पर खुशी लिए हुए बच्चे

ग्रीष्मावकाश में सभी प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापकों के दस दिवसीय प्रशिक्षण में दो दिन खास तौर से आई0ई0डी0 समेकित शिक्षा के लिए रखे गये। प्रशिक्षण अवधि में प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों के अति उत्साह को देखकर जनशाला की टीम में भी खासा उत्साह एवं कुछ कर गुजरने की उत्कट इच्छा की प्रेरणा मिली प्राथमिक विद्यालय चिल्लावां सरोजनीनगर में पढने वाले कक्षा-3 के नन्हे छात्र हमीद से। आकस्मिक निरीक्षण में हमने पाया कि हमीद का एक पैर पोलियो से ग्रस्त था तथा उसने अपने एक पैर में कैलीपर्स (जूते) पहन रखे थे। कैलीपर्स पहनने के कारण वह चटाई पर एक टांग फैलाकर बैठा था। कक्षा में सभी बच्चों की भॉति वह भी रूचि लेकर पढ़ रहा था। अन्य कक्षाओं में घूमने के बाद जब मै पुनः बरामदे में आयी तो देखा कि हमीद खड़ा है। मैने उसे बैठने के लिए कहा तो उसने बताया कि टांग फैलाकर बैठने से जब थक जाता हूँ तो बाद के घण्टों में खड़े होकर

पढ़ता हूँ। मैने शिक्षिकाओं से बात की एवं उसे कुर्सी पर बिठाने का अनुरोध किया किन्तु हमीद कुर्सी पर बैठने के लिए तैयार नहीं था क्योकि उसके अन्य साथी चटाई पर बैठे थे। हमीद में पढ़ने की लालसा दिखाई दी। हमीद के कुर्सी पर न बैठने की बात मेरे हृदय की गहराई में बैठ गई थी। सोच रही थी कि काश विद्यालयों में भी अच्छी जगह होती एवं फर्नीचर होता। क्या होता होगा जिनके बच्चे बिना सहारे के चल नही सकते ? वे स्कूल कैसे आते होगे ? विद्यालय में कैसे बैठते होगे?

जनशाला के पास स्कूल न जाने वाले विकलांग बच्चो के आंकड़े उपलब्ध थे। हमने सर्वप्रथम इन्हीं बच्चो के परीक्षण एवं उपकरण वितरण का बीड़ा उठाया। सौभाग्य से सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से सरोजनीनगर में ही क्षेत्रीय पुनर्वास विकलांग केन्द्र सी.आर.आर.सी. एक वर्ष पूर्व ही खोला गया था। यह केन्द्र भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के अधीन

है। वहाँ के नोडल अधिकारी डा0 गिरीश वी0 गुप्ता से मिली। प्रथम चरण में दिनांक 27.07.2001 को सरोजनीनगर विकासखण्ड में प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों का परीक्षण करने की अनुमति उनके द्वारा दी गई। विद्यालयों के शिक्षकों ने ही उनके केन्द्र पर लाने की जिम्मेदारी ली। एक दिन में पूर्व से चिन्हित 33 बच्चों के स्थान पर 70 बच्चों का परीक्षण कराया गया उन्हें तत्काल आवश्यकतानुसार व्हील चेयर, ट्राईसाइकिल, बैसाखियां दी गई एवं कैलीपर्स की नाप

ली गई। इसी श्रंखला में "लोहिया पब्लिक समिति" ने प्राथमिक विद्यालय चिनहट में दिनांक 08.09.01 तथा मंगलम् संस्था ने 20.09.2001 को बक्शी का तालाब में एवं 27.11.2001 को 5 विकासखण्ड़ों में एक साथ जिला विकलांग अधिकारी के सहयोग से अध्ययनरत बच्चों का परीक्षण कराकर उपकरण वितरित कराये।

इसी बीच विकलांग कल्याण विभाग द्वारा यूएनडीपी परियोजना के अन्तर्गत सभी विकास खण्डो एवं नगर के दो वार्डो में विकलांग बच्चों का सर्वेक्षण कराया गया जिसमें लगभग 0-18 वय वर्ग के 11000 बच्चे विकलांगता से ग्रस्त पाये गये। जनशाला निदेशक के सम्मुख हम लोगो ने प्रस्ताव रखा कि यदि यूएनडीपी की ही टीम से सम्पूर्ण नगर क्षेत्र का भी सर्वेक्षण करा लिया जाए तो जनपद की एक पूरी संख्या प्राप्त की जा सकती हैं। नगर क्षेत्र के 108 वार्डो में विकलांग कल्याण विभाग के सहयोग से उनकी कुशल टीम द्वारा घर-घर जाकर सर्वे कराया गया जिसमें नगरक्षेत्र से 8000 विकलांग बच्चे चिन्हित किये गये। (तालिका देखें)

इस प्रकार कुल 18462 बच्चे विभिन्न प्रकार की विकलांगता से ग्रस्त पाये गये किन्तु मात्र सर्वे से यह बात नहीं बननी थी सोचा था कि यूएनडीपी परियोजना के अन्तर्गत सर्वेक्षण में चिन्हित् बच्चों का परीक्षण एवं उपकरण वितरण कैम्प कराया जायेगा किन्तु वार्ताओं के दौर में ज्ञात हुआ कि उनके प्रोजेक्ट में इस तरह का प्राविधान नहीं किया गया फिर जनशाला टीम ने ही बीड़ा उठाया। निदेशक जनशाला की अध्यक्षता में दिनांक 09.11.2001 को एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित कर निदेशक आईपीएच डा0 धर्मेन्द्र जी नोडल अधिकारी सीआरआरसी डा0 गिरीश वी. गुप्ता, उप निदेशक यूएनडीपी विकलांग कल्याण विभाग के अधिकारी तथा डायट के प्राचार्य एवं बेसिक शिक्षा अधिकारी ने प्रतिभाग किया तथा आगे की कार्ययोजना तय की गई। निदेशक आईपीएच (विकलांग जन संस्थान विष्णु दिगम्बर मार्ग दिल्ली) ने सीआरआरसी के माध्यम से जनपद में परीक्षण कैम्पों को आयोजित करने की सहमति दी।

दिनांक 25.12.01 से 28.12..2001 चार दिवसीय परीक्षण शिविर में मा0 प्रधानमंत्री के जन्म

विकासखण्डवार विकलांगता विवरण

जिला -लखनऊ

	अल्प दृष्टि	अन्धापन	मानसिक विकलांग	श्रवण विकलांग	अस्थि विकलांग	योग
बक्शी का तालाब	66	102	150	421	1014	1753
चिनहट	29	40	108	188	614	979
गोसाईगंज	41	20	64	117	402	644
हजरतगंज	2	19	24	17	63	125
काकोरी	23	56	148	489	588	1304
माल	20	103	190	755	1040	2108
मलिहाबाद	48	58	181	722	822	1831
मोहनलालगंज	14	29	68	133	312	556
सरोजनीनगर	42	66	123	243	688	1162
नगर क्षेत्र						8000
योग	285	493	1056	3085	5543	18462

दिवस के शुभ आवसर पर शुरूआत हुई सरोजनीनगर विकास खण्ड के विकलांग बच्चों के परीक्षण की । डा0 गिरीश वी. गुप्ता एवं उनकी टीम तथा दिल्ली से आये डा0 गुप्ता के दो सहयोगी एवं देहरादून से नेत्र परीक्षण हेतु आये डा0 लखैड़ा ने सरोजनीनगर क्षेत्र में अपने परिसर में ही जनशाला के सहयोग से कैम्प लगाया। विकलांग बच्चों की भारी भीड़ देखकर मन दहल उठा। निर्धनता के साथ-साथ अभिभावकों में जागरूकता की अत्यधिक कमी दिखाई दी। पल्स पोलियो के निरन्तर अभियान चलाये जा रहे हैं किन्तु अनेकानेक हाथ-पैरों से अपाहिज बच्चों को देखकर मन विचलित हुए बिना नही रह रहा था। सबसे अधिक दुःख लग रहा था उन माता-पिताओं को देखकर जो अपने बच्चों को न तो गोद में उठा सकते थे न ही उन्हे जमीन पर घिसटता हुआ देख सकते थें। 16-17 वर्ष की वे बालिकाएं जिनका शरीर बैटे-बैठे इतना भारी हो गया था कि उठाना मुश्किल हो गया था। उन्हें जब ट्राई साइकिल उपलब्ध करायी गयी तो उनके माता-पिता की आँखें आसुओं के रूप में आशीर्वाद दे रही थी। परीक्षण कैम्प में लगभग 669 बच्चों ने अपना परीक्षण कराया जिसमें 86 केस सर्जरी के पाये गये। अनेकानेक बच्चों ने आवश्यकतानुसार उपकरण प्राप्त किये। समुदाय ने पूरा सहयोग देकर सोने पे सुहागे का काम किया। विकलांग बच्चों के नाश्ते का प्रबन्ध सरोजनीनगर सोसायटी के संभ्रान्त नागरिकों ने ही किया।

फिर चल पड़ा काफिला माल की ओर। सर्वेक्षण के दौरान माल में 2108 बच्चे विकलांग पाये गये। माल के कैम्प में दिनांक 18-19 जनवरी 2002 को उससे से भी अधिक कारूणिक दृश्य देखने को मिला। छोटी-छोटी ठेलियों, साइकिलों, ट्रेक्टर तथा अन्य

साधनों से दूर दराज के विकलांग बच्चों का जन सैलाब पू0 माध्यमिक विद्यालय माल में मानो उमड़ पड़ा। दिनांक 18.1.2002 को सीआरआरसी से एक ट्रक व्हील चेयर, ट्राई साइकिल, बैसाखी एवं ब्लाइन्ड स्टिक भेजी गयीं थी परन्तु वे सांय काल तक समाप्त हो चुकी थी। अभी दूसरा दिन बाकी था। सर्दी के मौसम ने लगभग 200 बच्चों को वापस घर भेजने के लिए मजबूर किया। हमारी जनशाला की टीम रात्रि में नौ बजे लखनऊ लौटी थी किन्तु जनून था उपकरणों की एक खेप माल भेजने का। समस्या जटिल थी क्योंकि पूर्व ट्रक में बिना व्यवस्थित किये हुए सामान भेजा गया था और एलिमको के कर्मियों ने वहीं सामान तैयार किया था। डा0 गुप्ता ने बताया कि सीआरआरसी पर तैयार व्हील चेयर एवं ट्राईसाइकिल रखे हैं लेकिन ट्रक में मुश्किल से पांच या छः ही आयेंगे। हमें तलाश थी एक बड़े ट्रक की, प्रयास करने पर भी हमें ट्रक नहीं उपलब्ध हो रहा था। अचानक सुबह 6 बजे एक प्रस्ताव आया कि स्कूटर इंडिया का एक माल लदा ट्रक हैं उसके नीचे के हिस्से में टैम्पो लोडेड् हैं यदि ऊपर के प्रथम तल पर आपका सामान रखा जाय तो हम भेजने को तैयार है। प्रातः ही सबने मिलकर ट्रक पर काफी उपकरण लोड कराये एवं उसे माल भेज दिया। माल में दूसरा दिन भी काफी भारी रहा। ठंडक एवं वारिश होने के बावजूद लोग दूर-दूर से अपने बच्चों को लिये आ रहे थे। वहीं टाईअप हुआ - सामुदायिक चिकित्सा केन्द्र के चिकित्सकों के साथ। उन्होनें कहा कि प्रत्येक बुद्धवार के दिन आपके द्वारा त्मिमतमक कराये आपरेशन के केसेज हम स्वयं भी देखेंगे। इस परीक्षण कैम्प में लगभग 646 बच्चों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी, 400 बच्चों के कैलीपर्स के नाप लिये गये जो तैयार होने के बाद अतिशीघ्र बच्चों कों वितरित किये जायेगें। ब्लाक स्तरीय शिक्षकों ने फालोअप का संकल्प लिया तथा पूरे दो दिन विकलांग बच्चों के माता-पिताओं को ऐसे बच्चों के बारे में कांउसलिंग की। यू.एन.डी. पी. योजनान्तर्गत गाँव-गाँव में ग्राम पुनर्वास कर्मी एवं विकासखण्ड पुनर्वास कर्मियों की नियुक्ति हुई है उन्होने भी गाँव-गाँव में जाकर प्रचार -प्रसार तथा रजिस्ट्रेशन में भरपूर सहयोग दिया। अब 30-31 जनवरी को मलिहाबाद ब्लाक में परीक्षण एवं वितरण कैम्प लगाया गया यहाँ भी लगभग 669 विकलांग बच्चों का परीक्षण किया गया। जिसमें लगभग 380 बच्चों को स्थल पर ही उपकरण उपलब्ध कराये गये। इन शिविरों के संचालन में तथा विकलांग बच्चों को उपकरण दिलाने में जो अनुभूति एवं आत्म संतोष प्राप्त हुआ है वह वर्णनातीत है। परीक्षण शिविरों की यह यात्रा तब तक चलती रहेगी जब तक सभी विकास खण्ड के बालक बालिकाओं को राहत नहीं मिल जाती। इसके बाद भी जरूरत होगी माता-पिता एवं समुदाय को जागरूक करने की। हमारा ऐसा संकल्प ही देश में विकलांगता के अभिशाप को दूर कर सकता है।

विकलांग परीक्षण व समेकित शिक्षा

- 'सपोर्ट टू चिल्ड्रेन विद डिसएबिलिटीज़' प्रोजेक्ट के तहत डायट सदस्यों सुनीति शर्मा व सुनीता श्रीवास्तव ने हैदराबाद में एन आई एम एच में प्रतिभाग किया।
- दस दिवसीय शिक्षक प्रशिक्षण में खासतौर से दो दिन समेकित शिक्षा के रखे गये जिसके अन्तर्गत शिक्षकों को अक्षमताओं की पहचान व शिक्षण विधाओं का ज्ञान दिया गया।
- अक्षमताओं की पहचान, शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण में अक्षमताग्रस्त बच्चों की शिक्षा व्यवस्था की विस्तृत जानकारी के लिए पन्द्रह प्राथमिक शिक्षकों एवं दो डायट सदस्यों को अमर ज्योति रिहेबिलिटेशन सेन्टर दिल्ली में प्रशिक्षण हेतु भेजा गया।
- अद्यतन सभी विकास खण्डों व नगर क्षेत्र के प्रा.वि. में नामांकित बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया जा रहा है। बच्चों को उनकी अक्षमताओं के अनुरूप उपकरण उपलब्ध कराये जा रहे हैं।
- तीन विकास खण्डों में विकलांग बच्चों का विकलांगतावार परीक्षण तथा उपकरण वितरण का कार्य किया जा चुका हे जिसमें 1900 बच्चों को लाभान्वित किया जा चुका हैं।
- परीक्षण एवं वितरण कैम्प में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के आधीन क्षेत्रीय विकलांग पुनर्वास केन्द्र सरोजनीनगर लखनऊ तथा दो स्वैच्छिक संस्थायें मंगलम् एवं लोहिया पब्लिक समिति सहयोग कर रही है।

बच्चों का अपना पुस्तकालय

बच्चों में स्वाध्याय की प्रवृत्ति के विकास हेतु जनशाला ने प्रत्येक न्यायपंचायत स्तर पर 180 बालोपयोगी पुस्तकों का संग्रह दिया है। ये पुस्तके बच्चों के विषयज्ञान के साथ-2 कहानी, कविता, पहेलियें, क्विज, पजल, कला, संगीत, से सम्बन्धित है तथा शिक्षकों के लिए भी उपयोगी साहित्य प्रदान किया गया है। शिक्षक प्रशिक्षणों में यह भी प्रयास किया जाता है कि पुस्तकों से सम्बन्धित क्विज कराई जाय है जिससे शिक्षक स्वयं ज्ञानार्जन करता है तथा बच्चों को भी अध्ययन हेतु प्रेरित करता है।

ये पुस्तकें काफी आकर्षक सचित्र एवं उत्तम कागज पर है जो बच्चों का ध्यान बरबस अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। बच्चे ही इन पुस्तकों के वितरण एवं रख रखाव में मदद करते है।

यदि किसी कक्षा में शिक्षक नही है तो बच्चे ये पुस्तकें पढ़ते है।

निरीक्षण के दौरान मैने पाया कि कक्षा 1 का नितिन इन्द्र धनुष के पन्ने पलट रहा था। उसे मात्रा लगाकर पढ़ना नहीं आता था। मैंने जब उसे पूछा कि पढ़कर सुनाओं तो वह नहीं पढ़ सका किन्तु पुस्तक में बने सुन्दर चित्रों को देखकर उसने पूरी कहानी सुना दी। वह चित्र पठन कर रहा था।

इसी प्रकार अन्य बच्चे भी शान्ति से पढ़ते हुये मिले। अब बच्चे उत्सुक रहते हैं किताब लेने के लिये तथा पढ़कर भी आते हैं।

पठन पाठन को सीखने सिखाने की क्रिया का अभिन्न अंग बनाने के लिए जनशाला अन्तर्गत सभी न्याय पंचायत संसाधन केन्द्रों पर एक पुस्तकालय स्थापित किया गया हैं।

एन.पी.आर.सी.सी. द्वारा विद्यालय भ्रमण के दौरान बच्चों को रूचि के अनुसार पुस्तकों का वितरण किया जाता है। पुनः अगली बार पढ़ी हुई पुस्तकें लेकर दूसरी नई पुस्तक दी जाती हैं। पढ़ी हुई पुस्तकों पर बच्चे शिक्षक और एनपीआरसीसी मिल कर चर्चा करते है।

वर्तमान में प्रत्येक एन.पी.आर.सी. तथा बी.आर.सी. अर्थात कुल 107 स्थानों हेतु पुस्तकें उपलब्ध हैं।

किताबें कुछ कहना चाहती हैं।

किताबें करती हैं बातें
बीतें जमानों की
दुनिया की इंसानों की
आज की कल की
एक एक पल की
खुशियों की गमों की
फूलों की बमों की
जीत की हार की
प्यरा की मार की
क्या तुम नही सुनोगे
इन किताबों की बातें
किताबें कुछ कहना चाहती है
तुम्हारे पास रहना चाहती है।

सफदर हासमी

प्राथमिक विद्यालयों मे चलाए जा रहे कौशल विकास कार्यक्रम

जनशाला के अन्तर्गत सरोजनीनगर विकास खण्ड के 4 प्राथमिक विद्यालयों में चार प्रकार के कला शिल्प एवं बागवानी से सम्बन्धित कार्यक्रम कक्षा-4 एवं 5 के विद्यार्थियों के लिए संचालित किए जाने की स्वीकृति सितम्बर, 2001 में प्राप्त हुई और इसका क्रियान्वयन 29 सितमबर, 2001 से प्रारम्भ हुआ। 29 सितम्बर को सभी चारों विद्यालयों में कार्यक्रम के विषय में जानकारी व प्रदर्शन किए गए।

06 अक्टूबर, 2001 से परियोजना में निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार क्रमशः परवर पश्चिम में मृदा-शिल्प, माती में खद्दरग्राफ, बिजनौर में कठपुतली तथा नटकुर में बागवानी, सभी कार्यक्रम प्रस्तावित कार्ययोजना के अनुरूप प्रारम्भ किए गए, किन्तु बागवानी के कार्यक्रम हेतु सुरक्षित भूमि इस योग्य नहीं है, जिस पर पौधों को लगाया जा सके इसको ध्यान में रखते हुए इस योजना के उन पक्षों को बच्चों से मॉडल के रूप में कार्यान्वित कराया गया, किन्तु उसे वास्तविक रूप नहीं दिया जा सकां यह विचार दूसरे चक्र में मूर्तरूप ले सकेगा, जब उनके द्वारा छोटे-छोटे गमलों में पौधे तैयार कराए जा सके और प्रयास यह किया जा रहा है कि पौधों के उत्पादन के विषय में व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं मॉडल के रूप में कराया जा सके।

अक्टूबर माह में पूरी तौर से कार्यक्रम चलाया जाने लगा किन्तु प्रायः शनिवार के कार्यक्रम स्कूलों में बाधित होते रहे शिक्षक, जो कि इस प्रशिक्षण के संचालन हेतु नियुक्त किए गये, वे जाते थे और छुट्टी के बाद स्कूल बन्द पाकर लौट आते थे। इस संदर्भ में डा0 मीना शर्मा, वरिष्ठ विशेषज्ञ, जनशाला कार्यक्रम से चर्चा के बाद यह निर्धारित हुआ कि कार्यक्रम को संचालित करने के लिए दूसरे दिनों का प्रयोग किया जाए। प्रायः यह भी दिक्कत आती रही कि विद्यालयों में एक ही अध्यापक उपलब्ध रहता था, माती के अतिरिक्त अन्य विद्यालयें में इस तरह की समस्या अधिक रही। अधिकतर एक या दो अध्यापक ही मिलते थे यद्यपि कि बिजनौर तथा माती में उपलब्ध शिक्षकों की और से पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। और यही कारण है कि यहाँ पर कार्यक्रम अधिक प्रभावी ढ़ग से कार्यान्वित हो पा रहे हैं।

चूंकि यह नए ढंग के कार्यक्रम थे, इसलिए इनके लिए उपकरणों की व्यवस्था यथा समय नहीं हो पाई। कुछ उपकरण अभी निर्माण की अवस्था में है। फिर भी प्रयास किया जा रहा है कि कार्यक्रम अधिक से अधिक व्यावहारिक रूप से संचालित हो सके बच्चे सभी तरह के कार्यो में बहुत ही रूचि दर्शाते हैं, किन्तु यह महसूस किया गया कि इसके लिए निर्धारित समय कम है यदि विद्यालय के सभी शिक्षक अपना दायित्व समझकर इस कार्यक्रम को अपनाएं तो इसका परिणाम निश्चित ही बहुत बेहतर हो सकता है।

प्रथम चक्र में परवर पश्चिम द्वारा केवल 70 दीप तैयार किए जा सके थे जिन दीपों को दीवाली के अवसर पर एक रू0 प्रति दीप बेचकर कुल रू0 70.00 विद्यालय को उपलबध करा दिए गये, यह ऐसा कार्याक्रम है, लिससे द्वारा विद्यालयों के आगे के कार्यो को चलाने के लिए स्वयं धन प्राप्त होता रहेगा, क्योंकि सभी चीजों से समबन्धित अनावर्ती सामग्री उन्हें उपलब्ध कराई जा रही है।

माती में मृदा-शिल्प के अन्तर्गत गमले बनवाए गए। अब यह कार्यक्रम नटकुर में प्रारम्भ हो गया है और माती में कठपुतली प्रशिक्षण। सम्पूर्ण कार्यक्रम जिन विद्यालयों में चल रहा है उसका परिणाम क्षेत्र में जाने से सही रूप में ज्ञात किया जा सकता है। कठपुतली प्रशिक्षण भी बिजनौर और परवर पश्चिम में पूरा किया जा चुका है। अब बिजनौर में किया जाना है। खद्दर ग्राफ माती और नटकुर में पूरा किया जा चुका है, अब बिजनौर में प्रारम्भ किया जाना है। इसी प्रकार बागवानी का विषय में नटकुर और बिजनौर में पूरा किया जा चुका है, अब इसे परवर पश्चिम में प्रारम्भ होना है।

जनशाला की उपलब्धियों का दर्पण

जनशाला द्वारा संचालित गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए 'जनशाला दर्पण' का त्रैमासिक प्रकाशन जुलाई 2000 से जनशाला परियोजना के निर्देशन में डायट, लखनऊ द्वारा किया जा रहा है।

'दर्पण' में जनशाला की उपलब्धियों, गतिविधियों, विभिन्न क्रियाकलापों की जानकारी देने का प्रयास किया जाता है शिक्षकों को पठन-पाठन से जोड़ने के लिए संकलित लेखों का प्रकाशन किया जाता है। शिक्षकों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने तथा उनके द्वारा रचित कविताओं, लेखों को भी समाहित किया जाता है। शैक्षिक नवाचारों से सम्बन्धित लेख, अभिनव प्रयोग, कक्षा शिक्षण को रोचक बनाने हेतु शिक्षकों द्वारा किये गये प्रयासों को स्थान दिया जाता है।

समुदाय द्वारा प्रदत्त सहयोग का उल्लेख भी दर्पण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

जनशाला दर्पण ग्रामीण नगर क्षेत्र के सभी प्राथमिक विद्यालयों, बी0आर0सी0, एन0पी0आर0सी0, शिक्षा विभाग से जुड़े सभी अभिकर्मियों, जनशाला से जुड़े सभी राज्यों तथा भारत सरकार को नियमित रूप से भेजा जाता है। साथ ही समुदाय द्वारा प्रदत्त सहयोग हेतु कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए दर्पण का अंक उन्हें प्रेषित किया जाता है।

शैक्षिक भ्रमण

कार्यक्रम को सुचारू रूप से चलाने के लिए यह आवश्यक है कि दूसरे स्थलों पर चल रहे उसी प्रकार के कार्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की जाये साथ ही उनके द्वारा किये जा रहे अभिनव प्रयोग से प्रेरणा लेते हुए अपने यहॉ अपनी परिस्थितियों के अनुकूल कार्यक्रम को गति प्रदान की जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक्शपोजर विजिट का आयोजन किया जाता है। अब तक जनशाला कार्यक्रम उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत निम्नलिखित एक्शपोजर विजिट की जा चुकी है-

1	एम.वी.फाउन्डेशन	समेकित शिक्षा
2	दिगन्तर एंव बोध	वैकल्पिक शिक्षा
3	सिनी आशा कोलकाता	शहरी क्षेत्र के अपंवचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा
4	हैदराबाद	ब्लाक समन्वयको की कार्य प्रणाली का अध्ययन
5	भोपाल	कम्प्यूटर शिक्षा का अध्ययन

उपरोक्त एक्शपोजर विजिटों का लाभ जनशाला कार्यक्रम ने उठाया -

1 समेकित शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करते हुए अध्यापक प्रशिक्षण माड्यूल में दो दिवसीय कार्यक्रम डाला गया।
2 वैकल्पिक शिक्षा की कार्य योजना को बल मिला।
3 शहरी क्षेत्र के अपवंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए प्रथम प्रोजेक्ट प्रारम्भ हुआ।
4 ब्लाक समन्वयकों की कार्यप्रणाली में सुधार एवं उनकी कार्य दृष्टि का विस्तार हुआ।
5 प्राइमरी शिक्षा में कम्प्यूटर का उपयोग प्रारम्भ हुआ।

- हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि इन गहन जंगलों में शिक्षा के इतने प्रयास किये गये होंगे।

  पूर्वी गोदावरी (आन्ध्र प्रदेश) भ्रमण के बाद बी.आर.सी समन्वयकों के वक्तव्य

- ऋषि वैली के स्कूल देखकर अपने विद्यालयों को भी इसी तरह सजाने का संकल्प लेता हूँ।

  मनोज मिश्र, समन्वयक, मोहनलालगंज

- कोलकाता भ्रमण ने शहरी अपवंचित वर्ग के बच्चों के लिए कार्य करने की नयी प्रेरणा दी है।

  समर अब्बास जैदी, विशेषज्ञ जनशाला

विभिन्न विभागों से समन्वय (एक दृष्टि में)

विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएं –

- CII (Confederation of Indian Insdustries) द्वारा नगर क्षेत्र में एक प्राथमिक स्कूल के भवन का निर्माण कराया गया तथा 10 अन्य विद्यालयों में शौचालय तथा अन्य सुविधाएं प्रदान की गई हैं।
- नगर के चयनित विद्यालयों में CII द्वारा कम्प्यूटर उपलब्ध कराये जा रहे हैं।
- राज्य नगर विकास अभिकरण (SUDA) द्वारा सांसद निधि से 45 विद्यालय भवनों का निर्माण किया जा रहा है।
- नगर क्षेत्र के ऐसे 20 विद्यालयों को जो भवनहीन थे और किसी एक ही विद्यालय भवन में विभिन्न पालियों में संचालित थे उन्हें जिला नगरीय विकास अभिकरण (DUDA) द्वारा निर्मित सामुदायिक केन्द्रों में स्थानान्तरित किया गया है।
- हिन्दुस्तान पेट्रोलियम ने एक विद्यालय भवन का निर्माण किया हैं तथा एक निर्माणधीन है।
- TELCO द्वारा पांच विद्यालयों में मरम्मत, बाउन्ड्रीवाल, कुर्सी, मेज, खेल का सामान आदि उपलब्ध कराया गया है।
- IFFCO द्वारा 10 विद्यालय भवनों की रंगाई पुताई करायी गयी हैं।

समेकित बाल विकास परियोजना से समन्वय

- आंगनवाड़ी केन्द्रों के कार्यक्रम में शैक्षिक इनपुट भी डाला गया।
- 150 आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों तथा सम्बन्धित परियोजना अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया।
- 80 केन्द्रों की आधार भूत सुविधाओं में वृद्धि की जा रही है।
- इन केन्द्रों पर प्रति केन्द्र रू0 5000/- मूल्य के खिलौने जिनका उपयोग छोटे बच्चे कर सें, जनशाला द्वारा प्रदान किये जा रहे हैं।

स्वास्थ्य विभाग से सहयोग

- जनपद के सभी विद्यालयों में बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया जा रहा है।
- 204050 स्वास्थ्य कार्ड छपवाकर सभी विद्यालयों में पहंचाए जा चुके हैं।
- डाक्टर एवं ए.एन.एम. विद्यालयों में जाकर स्वास्थ्य परीक्षण कर रहे हैं।

यू.एन.डी.पी.एवं विकलांग विभाग से सहयोग

- पूरे जनपद में 0-18 वर्ष तक के विकलांग बच्चों का व्यापक सर्वे कराया गया।
- 18662 चिन्हित विकलांगों के लिए परीक्षणकैम्पों का आयोजन एवं आवश्यक उपकरण वितरित कराये जा रहे हैं
- कक्षा 1-5 तक की 1000 पुस्तकों को ब्रेल में छपवाकर उपलब्ध कराने का कार्य प्रगति पर है।
- ऐसे 200 विद्यालय जहां विकलांग बच्चों की संख्या अधिक है उनमें रैम्प तथा विशेष प्रकार के शौचालय बनाए जा रहे हैं।

नगर क्षेत्र में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा वैकल्पिक शिक्षा कार्यक्रम

ग्रामीण क्षेत्र के सभी विकास खण्डों में शैक्षिणक सुधार हेतु अनेक गतिविधियां एक साथ चल रही थी। किन्तु नगर क्षेत्र में अभी बहुत काम करना था। जनशाला, नगर के दो शैक्षिक वार्डों में संचालित थी। इन वार्डो में स्कूल न जाने वाले बच्चों को विद्यालय लाने हेतु ख्याति प्राप्त स्वैच्छिक संस्था बेटी (BETER EDUCATION THROUGH INNOVATION) ने अपना योगदान देने की पहल की। उन्हें भी जनशाला से जोड़ा गया इसके अतिरिक्त 'प्रथम' जो कि जनशाला जयपुर के साथ पहले से कार्य कर रहा था उस संस्था के सदस्यों ने लखनऊ में भी कार्य करने की रूचि दिखाई। 'प्रथम' की सुस्पष्ट कार्य योजना के फलस्वरूप उन्हें भी जनशाला लखनऊ का अंग बना लिया गया।

इन संस्थाओं द्वारा नगर क्षेत्र में किये गये प्रयासों की कहानी आइये सुने उन्हीं की जुबानी -

स्वयंसेवी संस्था बेटी फाउन्डेशन के प्रयास

तेज आवाज में बजता स्टीरियो, सड़क के किनारे बने कमरों में बने अड्डों पर जरी, जरदोजी, चिकन का

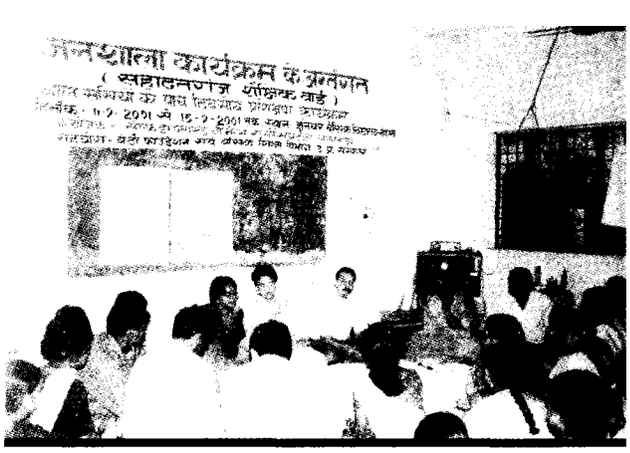

काम करते बच्चे, पंतगों के निर्माण में लगे परिवार, विशेष प्रकार के धागे (मंझा) पर लेप लगाते मजीद के बूढ़े हांथ/पुराने लखनऊ की आबो हवा अब भी पुराने ही अन्दाज में बहती हैं तंग सकरी गलियां, रास्तों पर बहता पानी, गन्दगी का साम्राज्य, काम करता बचपन, मजदूरी की तलाश में सड़कों पर आस लगाये लोग, सब कुछ वैसा ही है। शाम के समय हुक्के की गुड़गुड़ाहट के साथ मो0 नूर अली बताते है कि परिवर्तन सिर्फ बड़ों के लिए हुआ है।

इन्ही बस्तियों के बीच की एक बस्ती 'थड़ी' जहां स्थित पानी की टंकी के पास साइकिल की दुकान जिस पर काम करने वाला इमरान मुस्कराकर कहता है कि पूरे दिन काम के बाद उसे दस रूपया मिल जाता है और उसके बदले उसे पंक्चर बनाने के साथ-साथ साइकिल की मरम्मत का कार्य भी देखना पड़ता है। यही नहीं जहां इमरान दस रूपये पाता है वही वह अपने मालिक की काफी पैसा कमाकर देता है। जब इससे पूछा गया कि पढ़ने जाते हो कि नही, तो बड़ी मासूमियत के साथ यह बच्चा उदास स्वर में 'नहीं' बोलता है। शायद इसे पता ही नहीं कि अच्छा जीवन जीने के लिए पढ़ाई भी एक सीढ़ी के रूप में होती है और पता भी क्यों हो क्योंकि पूरी बस्ती में उसके घर के पास रहने वाले बच्चे या बड़ा कोई तो पढ़ा नही है और न ही कभी उन लोगों ने इसके बारे में सोचा। उनका मकसद तो सिर्फ है कि यदि बच्चा काम पर लग जायेगा तो अभी से दस बीस रूपये कमाना शुरू कर देगा जिससे परिवार का खर्च चलता रहेगा।

यह सोच यह समझ सिर्फ एक ही बस्ती की नहीं वरन् नगर क्षेत्र में हजारों ऐसे बच्चे भी हैं जो इस

वातावरण में अपना जीवन गुजार रहे हैं। इनकी दास्तां के बारे में यदि आप कौ जानना हे तो चौराहों पर गाड़ियों की सफाई करते, शहर के प्रमुख ठिकानों पर बूट पालिश करते, होटलों, चाय की दुकानों के साथ-साथ बस्तियों में कूड़ा बीनते ये बच्चे आसानी से मिल जायेगें शिक्षा की सोच से दूर इन बच्चों को कभी इस बात का अहसास होता होगा क्या जीवन इसी का नाम है? रंग बिरंगी पोशाके पहने बच्चों को जब ये बच्चे देखते होगें तो निश्चित तौर पर एक प्रश्न उनके मष्तिष्क में उठता होगा "क्या हम पढ़ नहीं सकते" हमारा जीवन सिर्फ दूसरों के आगे हाथ फैलाने के लिये ही हुआ है ?"

समय - समय पर योजनायें तमाम चली सुफलता भी प्राप्त हुई परन्तु वह सफलता शायद पर्याप्त नहीं थी जिस कारण अभी भी हजारों मासूम विद्यालयों की झलक नहीं देख पा रहे हैं। इसी को ध्यान रखते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ व भारत सरकार तथा उ0प्र0 सरकार के सहयोग से प्रदेश सरकार के एक मात्र जनपद लखनऊ के आठ विकासखण्डों तथा नगर क्षेत्र के दो शैक्षिक वार्डो में 'जनशाला ' नामक कार्यक्रम चलाया जा रहा है।

सहयोगी संस्थाओं का चयन

तारीख थी 30 जुलाई और 1 अगस्त 2000, स्थान था एस.सी.ई.आर.टी. का सभाकक्ष, उद्देश्य था प्राथमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु समुदाय के साथ मिलकर कार्य करना, कार्यक्रम का नाम था 'जनशाला'। यह पहला अवसर था जब बैठक में उपस्थित सभी संभ्रान्त अधिकारी व स्वंयसेवी संस्थाओं के लोग इस बात की वकालत कर रहे थे कि समुदाय का सहयोग ही सर्वोच्च है। जैसा कि सर्व विदित था कि जनशाला कार्यक्रम दो शैक्षिक वार्डो में चलाया जायेगा। इसी को इस क्षेत्र में लागू करने के उद्देश्य से बालिका शिक्षा व प्राथमिक शिक्षा के अतिरिक्त प्रशिक्षण, मूल्याकंन व अनुश्रवण के क्षेत्र में कार्य करने वाले स्वयं सेवी संगठन 'बेटी फाउन्डेशन' को इस कार्य को करने हेतु सर्व सम्मति से चयनित किया गया। इसके अतिरिक्त दोनों शैक्षिक वार्डो हजरतगंज, सआदतगंज में बेटी फाउन्डेशन का सहयोग करने के लिये क्रमशः लक्ष्मी व सेवा लखनऊ नाम की दो अन्य स्वयंसेवी संस्थाओं का चयन किया गया। ये दोनों संस्थाये अपने अपने कार्यक्षेत्र में महिला एवं बाल विकास के सम्बन्धित कार्यक्रमों को संचालित करने में अनुभव रखते है।

बस्ती का सर्वेक्षण

कार्यक्रम के प्रारम्भ होने के साथ साथ सहयोगी संस्थाओं के सहयोगियें के साथ एक निर्धारित प्रपत्र पर सर्वेक्षण का कार्य प्रारम्भ किया। चूँकि कार्यक्रम से लोग अनिभिज्ञ थे और हमारे सम्बन्ध बस्ती में बिल्कुल न के बराबर थे। इसलिये बार बार ऐसी परिस्थितियां आयी जिस कारण लोगों ने हमारी हँसी उड़ायी। समस्या ख़ासकर उन बस्तियों में आयी जहाँ अनाधिकृत रूप से लोग रह रहे है तथा सरकार द्वारा उन बस्तियों को खाली कराने के आदेश भी दे दिये जा चुके है। लोगों को लगता था कि ये लोग बच्चों कौ पढ़ाने नहीं बल्कि घरों का विवरण लिख कर जल्दी घरों को तुड़वा देगें। कई बार स्थितियां यहां तक आयी कि लोगों ने बस्ती में हमें घुसने नहीं दिया। कुछ बस्तियों में लोग हमें जनगणना वाले समझते तो कुछ में फेरी वाले। धीरे-धीरे समय बीतता गया और हमारे साथ डूडा, आंगनबाडी, नागरिक सुरक्षा संगठन के लोग, अध्यापक लोग जुड़े जिनके सहयोग से बस्तियों का सर्वेक्षण हुआ। इस सर्वेक्षण में उन तमाम बातों कौ जानने का प्रयास किया गया जो कि इस कार्यक्रम के लिये महत्वपूर्ण थी।

और धूम मच गयी :-

सर्वेक्षण के पश्चात विद्यालय स्तर पर शैक्षिक सहयोग देने के लिये एक 25 सदस्यीय कोर ग्रुप का गठन किया गया। बस्तियों के प्रबुद्ध लोगों के इस ग्रुप को एक दिवसीय प्रशिक्षण देकर कार्यक्रम कौ विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया गया तो उन्हें पता चला कि सरकार उनके बच्चों को शिक्षित करने के लिये क्या क्या कर रही है। लोगों ने कहा कि हमें पता ही नहीं चला कि सरकारी स्कूलों में इतनी सुविधायें मिलती है। इस कार्यक्रम ने लोगों को एक बार पुनः हमसे जुडने

का अवसर प्रदान किया। शिक्षा के साथ साथ हमने उनका दुख दर्द भी जानने का प्रयास किया जिसमें उन्होनें कई ऐसी बाते बतायी जो सम्पर्क न रहने के कारण परेशानी बनकर रह गयी थी। वे 25 लोग हमारी सीढ़ी के रूप में हमसे जुड़ रहे थे। अब मंजिल काफी आसान लग रही थी लोगों का एक नया वर्ग जो उपहास उड़ाता था मास्टर जी के नाम से सम्बोधित करने लगा।

फिर शुरू हुआ सिलसिला बच्चों की खोज बीन का माध्यम था "उत्सव" व "स्कूल चलो अभियान" "शोर करो भाई शोर करो, शिक्षा को सब ओर करो" की परिक्रमा को उस समय और बल मिल गया जब क्षेत्रीय सभासद, विधायक, वकील, पत्रकार, स्वयं सेवी संस्थाओं से जुड़े लोग और तमाम बस्तीवासियों ने इस कार्यक्रम में अपनी रूचि दिखायी। इसमें नुक्कड़ नाटक, माँ-बेटी मेला, रक्षाबंधन शिक्षा बंधन, रैली, प्रतियोगिताओं के अतिरिक्त लेखन, प्रभात फेरी जैसे कार्यक्रमों की धूम सी मच गयी। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम के अन्तर्गत दोनों वार्डो में लगभग 700 बच्चों का दाखिला स्कूलों में कराया गया

बाल मित्रों का चयन व प्रशिक्षणः-

लक्ष्य के अनुरूप बस्तियों को केन्द्र मानकर उनमें वैकल्पिक शिक्षा केन्द्र को खोलने का प्रयास किया गया जिसके लिये आवश्यकता थी केन्द्र संचालन हेतु कुशल सहयोगियों की । जिनके चयन का दायित्व सौंपा गया बस्ती के उसी कोर ग्रुप को । काफी छानबीन के पश्चात साक्षात्कार में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों को इस महत्वपूर्ण अभियान में शामिल होने का मौका मिला । इस अभियान का एक सबसे सफल पहलू यह भी रहा कि ज्यादातर बालमित्र स्नातक से लेकर पी.एच.डी. तक थे और शिक्षा के क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे थे। इसके बाद चयनित प्रतिभागियों का 5 दिवसीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। बेटी फाउन्डेशन, सेवा, लक्ष्मी के सन्दर्भ व्यक्तियों के अतिरिक्त इसमें जिला संदर्भ समूह के समन्वयकों ने भी प्रतिभाग किया। इसी प्रशिक्षण के दौरान नगरीय स्थिति को देखते हुये ब्रिज कोर्स शिक्षण प्रशिक्षण संदर्शिका ('अभिनव') का निर्माण भी किया गया।

और स्कूल नया हो गयाः-

अब तक तो बस्तियों में होड़ सी मच गयी थी लोग दूर से देखकर ही पहचान जाते थे। इसी होड़ में जीर्ण हो चुके तालकटोरा प्राथमिक विद्यालय के जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया गया। कुछ ने आर्थिक, कुछ ने शारीरिक सहयोग किया तथा 5,000 रूपया सरकार के सहयोग से प्राप्त हो गया जिसे लेकर खण्डहर बने विद्यालय को एक अच्छे शिक्षा केन्द्र के रूप में स्थापित कर दिया गया। लगातार समुदाय द्वारा देखरेख करने के कारण कार्य में लापरवाही बरतने वाली शिक्षिका का स्थानान्तरण समुदाय के लोगों ने उच्चाधिकारियों से मिलकर करवा दिया तथा उनके स्थान पर कुशल शिक्षिका विद्यालय में बच्चों को अच्छी तरह पढ़ा रही है तथा कार्यक्रम संचालन के पश्चात से लगभग हर विद्यालयों में मासिक बैठके होनी प्रारम्भ हो गयी है जिसमें हर बच्चे के बारे में बातचीत की जाती है।

विद्या केन्द्रों का आरम्भ :-

यह बड़ा ही सुन्दर अवसर था जब सभी की सोच को साकार होने का समय था तारीख थी 18 सितम्बर। एक साथ दोनों वार्डो की 52 बस्तियों में लगभग 1250 बच्चों के साथ समुदाय के प्रमुख व्यक्तियों की उपस्थिति में इन केन्द्रों का शुभारम्भ हुआ। यह पहला अवसर था जब बच्चे अपने कामों को छोड़कर पढ़ने के लिये इकठ्ठा हो गये थे। भविष्य की आस संजोये इन बच्चों की आंखों में एक नयी चमक दिखायी पड़ रही थी। आज उन्हें स्लेट मिल रही थी। कुछ केन्द्रों पर समुदाय के सहयोग से बिस्किट, बताशे भी बाँटे गये। लगातार समुदाय की सहमति व वहां के बच्चों की सुविधानुसार खोले गये इन केन्द्रों का संचालन भी उनकी सुविधानुसार ही हो रहा है। यहाँ प्रत्येक बच्चे का विवरण, उपस्थिति आख्या के साथ दैनिक क्रिया कलापों का विवरण भी लिखा जाता है यहीं यहीं इन केन्द्रों पर रूचिकर, ज्ञानवर्धक शिक्षा गतिविधियों के माध्यम से करायी जाती है। रोज बच्चों को कहानी सुनने व कहने का अवसर मिलता है। हमेशा भद्दी जुबान में बोलने वाले बच्चे "गुड मार्निंग" कहते है। कूड़ा बीनने वाला रामू पचास तक फरटिदार गिनती

सुनाता है। तीन महीने के इस महत्वपूर्ण सफर में बच्चों ने बाल मित्रों के साथ मिलकर अविश्वसनीय सफलता अर्जित की है।

चुनौतियां

वैसे तो यह कार्यक्रम शुरूआत से ही चुनौती भरा रहा है लेकिन कुछ चुनौतियां उस समय से ही होनी प्रारम्भ हो गयी जब से उन क्षेत्रों में कार्य करने की योजना बनी। जहां की रिवाज ही बच्चे को काम पर लगाकर उनसे कुछ कमाने की आदत डलवाने का था। और उन्हीं बस्तियों में जाकर ऐसे लोगों को शिक्षक के बारे में बताना था जो कि शिक्षा से कोसों दूर है। उनके सामने सिर्फ एक लक्ष्य होता है कि पूरे परिवार के साथ काम करके सबका पेट पालना। परिवार को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के साथ साथ इस बात की भी सबसे बड़ी चुनौती सामने आयी कि अभिभावक, बच्चों के अतिरिक्त हमें कारखानेदारों को भी अपने पक्ष की वकालत करने के लिये राजी करना पड़ा, क्योंकि बच्चों को काम के बीच से पढ़ने के लिये अपना नुकसान कर भेजने के लिये कारखानेदारों, दुकानदारों को राजी करना प्रमुख चुनौतियों में से एक था। सआदतगंज की बस्ती के एक कारखानेदार आरिफ का कहना है कि इस सहमति के बाद उनका नुकसान तो हुआ लेकिन प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति के लिये वे बच्चों को पढ़ने भेजते है। वे कहते है कि पढ़े लिखें बच्चों के साथ नये काम के लिये सिखाने में मेहनत कम करनी पड़ती है। लेकिन यहां तक पहुँचने के लिये तमाम चुनौतियां हमारे सामने आयी। सर्वेक्षण, कोर ग्रुप का गठन व निरन्तर सम्पर्क, उत्सवों में लोगों को उनका नुकसान करवाकर अपने साथ जोड़ने जैसे तमाम कार्यक्रमों पर आयी तरह तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ा। केन्द्रों पर बच्चों का नियमित न आना, या बीच बीच में आना इस प्रकार की तमाम चुनौतियां हमारे सामने आती रहीं लेकिन धीरज के साथ लगन, ईमानदारी व सहयोगियों के विश्वास के साथ दृढ़ आत्म-विश्वास के कारण इन सभी चुनौतियों पर सफलता प्राप्त हुई जिसका परिणाम केन्द्रों पर 1250 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

बयां जुदा-जुदा

1. कोर ग्रुप के सदस्य व लालकुँआ के सभासद रामू सान्याल कहते है कि यह पहला ऐसा कार्यक्रम है जिसमें समुदाय को हर स्तर पर जोड़कर कार्य करने के लिये तैयार किया गया । यदि इसी प्रकार के कार्यक्रम चलाये जायें तो उनका मूल्यांकन व क्रियान्वयन काफी बेहतर तरीके से हो सकेगा ।
2. शाहनज़फ वार्ड में डूडा से जुड़ी मीना श्रीवास्तव बताती है कि यह तो एक ऐसा कार्यक्रम है जो उस वर्ग के लिये है जिसने शिक्षा का महत्व ही नहीं समझा, बच्चों के लिये यह वरदान है ।
3. नागरिक सुरक्षा से जुड़े आर.के.रस्तोगी जी बताते है कि उनकी पहले से ही यह इच्छा थी कि शीतलादेवी वार्ड के सभी बच्चे पढ़े, इस कारण यह कार्यक्रम और भी महत्वपूर्ण है ।
4. सी.डी.एस. अध्यक्ष अर्चना निगम तो इस कार्यक्रम से इतना प्रभावित हुई कि उन्होनें 10 वर्षीय विकलांग विवेक के लिए व्हील चेयर (Wheel chair) उपलब्ध करायी । उनका मानना है कि इस तरह के ही प्रयासों की आवश्यकता है ।
5. बस्ती निवासी वसीम रिज़वी इस कार्यक्रम से इतना प्रभावित है कि वे तीन केन्द्रों को महीने में कई बार जा–जाकर देखते है तथा पढ़ने में तेज 10–10 बच्चों को पुरस्कार स्वरूप पेंसिल व रबर उपलब्ध कराते है तथा वे इससे काफी खुश है । अभिभावक मीटिंग भी आपही के द्वारा बुलाई जाती है ।

'प्रथम' - लखनऊ शिक्षा उपक्रम

कहानी एक कोशिश की.....

इस कहानी की शुरूआत हुअी 5 नवम्बर 2001 से, जब हमने (अवि घोड़के और तस्लिम बानो) लखनऊ शहर में अपना पहला कदम रखा।

यहाँ आने से पहले मन में कई सवाल थे। शहर कैसा होगा? लोग केसे होंगे? यहाँ का वातावरण हमें रास आयेगा भी या नहीं! अर्थात यह सारे सवाल कुछ पूर्वाग्रहों पर आधारित थे।

यहां पहुचने पर सबसे पहले हमने जनशाला के अधिकारियों से मुलाकातें की। सुश्री वृन्दा सरूप जी, कल्पना अवस्थी जी, मीना शर्मा जी इन सारे लोंगों के साथ बातचीत करने के बाद हमारी झिझक अपने आप कम हो गई। इन सारे लोगों की काम की पद्धति देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ।

डॉ. मीना शर्मा जी के सुझाव से हमने सबसे पहले हसनगंज व चौक जोन के विजिट किये। इस विजिट के दौरान जब हम कुछ बस्तियों में पहुंचे तब वहां की बाहरी स्थिति देखते ही उस बस्ती की गरीबी और पिछड़ापन महसूस होने लगता था। यहां लोगों से बातचीत करने पर कुछ मजेदार किस्से भी हो रहे थे। खास करके मेरी बंबईया हिंदी को लेकर।

इस विजिट के बाद हमने 'निशातगंज वार्ड' में अपना काम शुरू करने का निर्णय लिया। इसके तहत 'पुराना तकियाँ' बस्ती में हमने बस्ती सर्वेक्षण का काम शुरू किया। सर्वे के दौरान लोगों के कई सवालों का सामना करना पड़ता था। जैसे यह कार्यक्रम कितने दिन चलेगा, बच्चों को क्या क्या देोगे? बच्चों को पैसे मिलेंगे क्या? हम अपनी लड़कियां नहीं भेजेंगे (ना पढ़ने को, ना ही पढ़ाने को)। ऐसे सारे सवाल, जवाब और समस्याओं के चलते हमने अपना सर्वे पूरा किया।

यहां काम शुरू करने में दो बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ता था और पड़ेगा एक तो सांप्रदायिकता व दूसरा अभिभावक वर्ग की गैर जिम्मेदारी यहाँ हमने अपने काम की त्रिसूत्री योजना बना ली थी।

'संपर्क - सहभाग - स्वावलंबन'

इस त्रिसूत्री योजना के आधार में हमने अपना 'ब्रिजकोर्स' का काम शुरू किया। इस वक्त हमारे हसनगंज और वजीरगंज इन दो जोन में 60 (साठ) ब्रिजकोर्स केन्द्र कार्यान्वित है। जिनमें लगभग 1650-1700 बच्चों का नामांकन हुआ है।

इन सारे ब्रिजकोर्स टीचर्स का छह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 14 से 20 जनवरी 2002 दरम्यान आयोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण शिविर को डायट की श्रीमती प्रमिला मिश्रा, सुश्रीसुनीति शर्मा और श्रीमती सुनीता श्रीवास्तव के साथ हमने संचालित किया।

अब हमारी कोशिश यह है कि आने वाले दिनों में

इन सारे बच्चों का मुख्य धारा को स्कूलों में दाखिला कर दिया जाये।

यहां एक बात कौ उल्लेख मैं जरूरी समझता हूँ वो है - यहाँ के अधिकारी वर्ग की गर्मजोशी, काम के प्रति लगन और सहकार्य की भावना। इसी के सहारे हमारी कोशिश कामयाब रही है। मीना शर्माजी क साथ काम करना अपने आप में एक अलग और महत्वपूर्ण अनुभव है।

यहां की नगर शिक्षा अधिकारी कु. पंकज गुप्ता जी ने भी समय-समय पर हमें जरूरी मार्गदर्शन और सहायता देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

हम सारे मिलकर यह कोशिश कर रहे हैं कि आनेवाले दिनों में लखनऊ का हर बच्चा स्कूल में होगा।

मेरा विश्वास है-कोशिश करने वाले की हार नहीं होती ।

ब्रिजकोर्स प्रशिक्षण

- बेटी फाउन्डेशन द्वारा हजरतगंज एवं सआदतगंज वार्ड के 52 वैकल्पिक शिक्षा केन्द्रों का संचालन किया जा रहा है। जिसमें 1250 विद्यालय न जाने वाले बच्चे पढ़ रहे हैं। 600 को फार्मल स्कूल में शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ा गया है।
- प्रथम, लखनऊ स्वैच्छिक संगठन एवं डायट लखनऊ द्वारा लखनऊ नगर क्षेत्र के दो शैक्षिक वार्ड हसनगंज एवं वजीरगंज के 55 शिक्षकों को 6 दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया।
- हसनगंज वार्ड में 24 केन्द्र संचालित है।
- वजीरगंज वार्ड में 31 केन्द्र संचालित हैं।
- प्रथम संस्था द्वारा 52 अनुदेशकों का प्रशिक्षण कराया जा रहा है।

विकलांगों को कृत्रिम अंग दिये गये

सरोजनीनगर (लखनऊ), 26 दिसम्बर (हि.स.)। विकलांग पुनर्वास केन्द्र सरोजनीनगर में ...योजित चार दिवसीय विकलांग परीक्षण शिविर के दूसरे दिन आज एक सौ बावन विकलांगों ... परीक्षण किया गया। इस मौके पर चार ...

जनशाला कार्यक्रम की दो दिवसीय कार्यशाला को सम्बोधित करती डा. मीना शर्मा। छाया : राष्ट्रीय सहारा

प्राथमिक विद्यालयों में बाल मेलों का आयोजन हुआ

हिन्दुस्तान 2.1.02

...कूल चला अभियान ...

लखनऊ, गुरुवार (जासं)। स्कूल ...भियान के तहत सरोजनी नगर ब्लाक ... न्याय पंचायत स्तर पर साइकिल रैली ... आयोजन किया गया। प्रधानाध्यापक ... निकाली गयी इस रैली में ...

विकलांग कल्याण शिविर

जनशाला कार्यक्रम की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

'अपवंचित वर्ग के बच्चों की शिक्षा के लिए रणनीति की जरूरत'

सहारा समाचार

लखनऊ, 28 अगस्त

बेसिक शिक्षा सचिव नेतराम ने आज अपवंचित वर्ग बच्चों को शिक्षा देने के लिए व्यापक रणनीति बनाने की जरूरत बतायी और कहा कि जनशाला कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लड़कियों, अनुसूचित जाति/जनजाति के अलावा झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों को शिक्षा मुहैया कराना है।

आरिफ कैसेल्स होटल में आयोजित कार्यशाला के प्रारम्भ में जनशाला के ... सलाहकार विनोबा जी. गौतम ने नगरीय ... चलाने वाले कार्यक्रम की जानकारी दी। ... अवसर पर विभिन्न राज्यों से आये प्रतिनिधि ... अपने राज्यों में जनशाला कार्यक्रम की प्रगति ... उसके स्वरूप की जानकारी दी। इन प्रतिनिधि ... कहना था कि जनशाला ... बच्चों को विद्यालय पहुंचाने में ...

पंद्रह हजार विकलांग बच्चों को उपकरण मिलेंगे

लखनऊ, 10 नवम्बर (निसं)। क्षेत्रीय पुनर्वास विकलांग कल्याण केंद्र छह विकास खण्डों के पन्द्रह हजार स्कूली विकलांग बच्चों के लिए उपकरण की व्यवस्था करेगा। यह निर्णय आज पुनर्वास विकलांग कल्याण केंद्र, जनशाला, यूएनडीपी और डायट के अधिकारियों की एक बैठक में लिया गया।

समेकेतिक शिक्षा के तहत आयोजित इस बैठक में 14 वर्ष आयु तक के स्कूलों में पढ़ने वाले विकलांग बच्चों को उपकरण देने ... अलावा उनके उपचार पर विचार किया ... उपकरण देने के अलावा 200 स्कू... विकलां... 'रैम्प' बन... दायित्व ... डायट ... पुनर्व... गुप्त ... के ...

गरीब बच्चों को शि... करेगी 'जनशाला'

जनसत्ता एक्सप्रेस

कार्यालय संवाददाता

लखनऊ, 28 अगस्त। भारत सरकार एवं संयुक्त राष्ट्र संघ की संयुक्त परियोजना 'जनशाला' के तत्वावधान में आज से दो दिवसीय कार्यशाला शुरू हो गयी। 'नगरीय क्षेत्र में अपवंचित वर्ग के बच्चों के शैक्षिक स्तर में सुधार, नामांकन एवं ठहराव' के लिए आयोजित कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए शिक्षा सचिव नेतराम ने कहा ... मुख्य उद्देश्य ...

अवसर पर सभी के लिए शिक्षा परियोजना निदेशक वृन्दा स्वरूप ने कहा कि यह कार्य... लखनऊ जनपद के समीप के विकास खण्ड सहित शहर की सघन झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों के हितों को ध्यान में रखकर चलाया जा रहा है। विभिन्न प्रान्तों से आये प्रतिनिधियों ने कहा कि जनशाला कार्य... लाभ बच्चों ...

प्राथमिक विद्यालयों में बाल मेला आयो...

प्राथमिक विद्यालय दिघिया में बाल मेला सम्पन्न

लखनऊ, शुक्रवार (जासं)। विश्व बैंक योजना के तहत प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों ... खेलकूद व मेले के प्रति रुझान उत्पन्न करने के लिए आज सरोजनीनगर के प्राथमिक विद्या... में बाल मेला का आयोजन किया गया। कक्षा 1 से 5 तक के बच्चों ने मेले में अपनी ... लगाकर जहां एक ओर नागरिकों का मन मोह लिया, वहीं दूसरी ओर विद्यालय की इंचार्ज ... कृष्णा अवस्थी ने अन्त्याक्षरी, कविता पाठ, सुलेख आदि प्रतियोगिताओं में अव्वल बच्चों को ... वितरित किए। मेले में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित ग्राम प्रधान राम दुलारे यादव ने समा... पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने पर बल दिया। बाल मेले में मुख्य अतिथि के अलावा ... अशोक कुमार पाठक बी.डी. वर्मा तथा पूर्णेन्द्र विशेष रूप से मौजूद थे।

बच्चों ने खान-पान का आनंद लिया

मोहनलालगंज (लखनऊ), शुक्रवार। आज प्राथमिक विद्यालयों में बाल मेलों का आयो... किया गया जिसमें बच्चों ने अपनी ही दुकानों पर बिक्री व खरीददारी कर चाट व टाफी ... या, गुब्बारे लिये तथा पुरस्कार भी पाये। प्राथमिक विद्यालयों में आज बाल मेलों का आयोजन ... था। प्राथमिक विद्यालय गोसाईगंज पर बच्चों को खाद्य सामग्री रखी ... द्वारा ही होनी थी। सेवकापुर स्कूल में सुबह ... टाल जैसी कोई व्यवस्था नहीं ... रीब पांच ...

विकलांग बच्चों का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर शुरू

लखनऊ, 26 दिसम्बर। जनशाला परियोजना एवं सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अन्तर्गत क्षेत्रीय विकलांग पुनर्वास केन्द्र के तत्वावधान में विकलांग बच्चों का परीक्षण शिविर लगाया गया। सरोजनी नगर में लगे इस चार दिवसीय शिविर का उद्घाटन कल 25 दिसम्बर को किया गया। 28 दिसम्बर तक चलने वाले इस

बच्चे ही नहीं बड़ों को भी लुभा रहा है इसका आकर्षण

बेसिक शिक्षा की बिगड़ी छवि को सुधारने की नयी पहल

बेसिक शिक्षा व्यवस्था में सामाजिक सहभागिता जरूरी

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को मिलेगी निःशुल्क किताबें

Inauguration of janshala

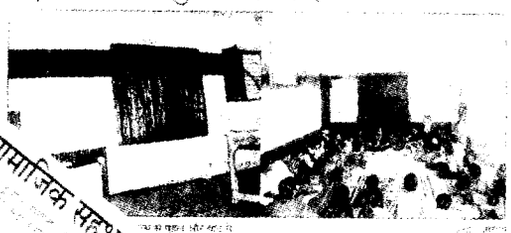

The NPRC Amethia Salempur was inaugurated by chief guest Kalpana Awasthi, director Janshala UP and Dr Meena Sharma, senior specialist Janshala, and SA Zaidi, Co-ordinator Ali Kishwar welcomed the chief guest and invited her to inaugurate the proceedings. Sunita Srivastava, block mentor garlanded the chief guest. The children presented Saraswati Vandana followed by a welcome song. Ali Kishwar then introduced Mr Awasthi as "an extremely capable person". Later, Mrs Awasthi and the other guests appreciated Mr Kishwar's efforts at successfully organising the programme and ...

जनशाला प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

जनशाला के जरिये प्रशिक्षित किये गये शिक्षक

बीस विद्यालय सूडा के कम्युनिटी सेंटरों में चलेंगे

लखनऊ, 23 अगस्त (व.सं.)। बेसिक ... बालेश्वर त्यागी ने निर्देश दिए कि ... के 20 विद्यालय सूडा के ... में चलाए जाएंगे। 28 ... के लिए जमीन सूडा ... श्री त्यागी ... 155 विद्यालय ... 20 विद्यालयों को ...

ग्राम शिक्षा समितियों को प्रशिक्षण दिया गया

लखनऊ, 21 जुलाई (वि.)। नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत प्राथमिक शिक्षा में ग्रामवासियों की सक्रिय भूमिका से लाभ उठाने हेतु ग्राम शिक्षा समितियों की स्थापना की गई है। इसके लिए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षित शिक्षकों द्वारा विभिन्न ग्राम पंचायतों में जाकर ग्राम शिक्षा समितियों को सहभागिता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बी.के.टी. क्षेत्र की न्याय पंचायत देवरईकला के अब तक पर्वतपुर, बीकामऊ, मदारीपुर तथा इंदौराबाग ...

School Chalo Rally

... Panchayat Resource Centre, Amethia Salempur, organised a School Chalo ... Monday in Kakori. The rally was organised by the coordinator of the village ... Those participated in the rally asked the people to send their children to ... for admission.

SEWA organises Shiksha Bandhan

... Shiksha Bandhan-Shiksha bandhan programme was organised by SEWA with the ... of the BETI Foundation in Lucknow under the "School chalo abhiyan" at ... Mehndiganj, and Katra Khudayar Khan Primary Schools. The objective ... linking the festival with the "School chalo abhiyan" was to make school-going ... lend a sense of security and support to non-school going ones. A total of ... school going children participated in the programme.

Street play on education

स्वास्थ्य परीक्षण

कुष्ठ निवारण प्रतियोगिता

न्याय पंचायत अमेठिया सलेमपुर के संकुल प्रभारी अली किश्वर की पहल पर प्राथमिक विद्यालय काकोरी में कुष्ठ निवारण प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र काकोरी के सहयोग से आयोजित इस प्रतियोगिता में ... एस. अवस्थी ने प्रथम स्थान प्राप्त करने ...

विकलांग शिविर में बंटे उपकरण

लखनऊ, 19 जनवरी। क्षेत्रीय विका... पुनर्वास एवं जनशाला कार्यक्रम के ... विकलांग शिविर का आयोजन किया गया ... दो दिवसीय इस शिविर में विकलांगों ... परीक्षण के साथ उनको चलने सुनने ... सहायक उपकरणों का बड़े पैमाने पर वि... किया गया।

शिविर का शुभारम्भ जनशाला कार्य... ने किया। ज्ञातव्य है ... विद्यालय के प्रांगण में ...

"मैं लड़की हूं, मुझे पढ़ना है"

मोहनलालगंज में स्कूल चलो अभियान के तहत विशेष आयोजन

स्कूल चलो अभियान के लिए साइकिल रैली निकाली